ISBN: 978-93-342-4498-4

व्यावहारिक हिन्दी: वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएँ



• डॉ. राजीव अग्रवाल
• रवि कांत वर्मा
• नेहा सिंह

व्यावहारिक हिन्दीः वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएँ

डॉ. राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर- शिक्षा संकाय
अतर्रा पी० जी० कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

रवि कांत वर्मा

एम०ए० (अंग्रेजी), एम०एड०

नेहा सिंह

एम०ए० (हिंदी), बी० एड०

व्यावहारिक हिन्दीः वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएँ

डॉ. राजीव अग्रवाल
रवि कांत वर्मा
नेहा सिंह

E-book संस्करण: 2024
मूल्य: रु 69

ISBN: 978-93-342-4498-4

प्रकाशक-
नेहा सिंह
ग्राम - पचनेही, जिला - बाँदा (उत्तर प्रदेश) - 210001
Mob - 9473771246
E-mail : nehashreeparmar@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तभी उन्नति कर सकता है, जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने के लिए समर्थ हो। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता, चिन्तन प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्माण्ड की परिधि को लांघा है वरन् अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का विकास करते हुए आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है, परन्तु मानव जाति के विकास की आधार शिक्षा प्रणाली ही है।

शिक्षा मानव विकास की वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक चलती रहती है। मनुष्य सदैव कुछ-न-कुछ सीखता रहता है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर इस योग्य बनाती है कि वह संसार में अपनी एक अलग पहचान बनाता है। वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रचार-प्रसार का एक माध्यम है और इसका उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सभी मूल्यों को पहुँचाने तथा भावी पीढ़ी को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है, **"व्यावहारिक हिन्दीः वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएँ"** इस पुस्तक को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है-

प्रथम अध्याय का शीर्षक अध्ययन परिचय है। जिसके अन्तर्गत भाषा, विभाषा और बोली, हिंदी भाषा का इतिहास, भारत में हिन्दी शिक्षण एवं अधिगम, भाषा शिक्षण, हिन्दी भाषा शिक्षण की समस्याएँ, व्यावहारिक हिन्दी एवं समस्या का प्रादुर्भाव तथा भावी संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण, हिन्दी शिक्षण के सम्बन्ध पर कतिपय शोध अध्ययनों का समीक्षात्मक निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में शोध अध्ययन की प्रक्रिया को शोध विधि, सर्वेक्षण विधि, अनुसन्धान अध्ययन में प्रयुक्त शोध, प्रतिदर्श चयन, साक्षात्कार अनुसूची तथा परीक्षण प्रशासन के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में प्रदक्तों का प्रस्तुतीकरण है जिसमें त्रुटि विश्लेषण, परलक्षित अशुद्धियों का वर्गीकरण तथा अनुसूची का प्रश्नशः विश्लेषण किया गया है।

पञ्चम अध्याय में निष्कर्ष एवं सुझाव शीर्षक के अन्तर्गत अध्ययन के सुझाव, शैक्षिक उपादेयता तथा भावी शोध हेतु सुझावों का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब

तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

10/03/2025

डॉ. राजीव अग्रवाल

रविकांत वर्मा

नेहा सिंह

अनुक्रमणिका

संदर्भ ग्रन्थ सूची

परशिष्ट

I- अतर्रा नगर का मान चित्र

II- साक्षात्कार अनुसूची

III- प्रदत्त संकलन

IV- जीवन वृत्त

प्रथम-अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

1.3 समस्या कथन

1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

1.7 अध्ययन का परिसीमांकन

1.8 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

प्रथम-अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

किसी भी देश का उच्चतम विकास उस देश कि शिक्षा प्रणाली पर आधारित होता है। शिक्षा श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण करती है और ये नागरिक ही देश का भविष्य हैं। शिक्षा केवल साक्षरता नहीं अपितु व्यक्ति के आन्तरिक गुणों का प्रकटीकरण भी है। उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास है और परिस्थितियों के साथ समायोजन करने कि क्षमता भी है।

शिक्षा विषय और भाषा दोनों को अपना आधार बनाती है। भाषा जिसके माध्यम से हम शिक्षा देते हैं और विषय जिसकी हम शिक्षा देते हैं। भाषा का परिमार्जित रूप ही साहित्य में प्रकट होता है। इस रूप में साहित्य भाषा की चरम परिणति है। भाषा सीखे बिना साहित्य तक नहीं पहुँचा जा सकता। भाषा साहित्य को सीखने का एक माध्यम भी है और एक विषय भी है। भाषा व्यवहार मानव को मनुष्य बनाता है। कहा भी गया है कि साहित्य, संगीत और कला से विहीन व्यक्ति पूँछ और सींगों से विहीन पशु के समान होता है।

जहाँ तक भाषा सीखने और सिखाने का प्रश्न है मातृभाषा के रूप में भाषा को सीखने कि आवश्यकता नहीं समझी जाती यह परिस्थिति और वातावरण से स्वयं अर्जित हो जाती है। औपचारिक रूप से इसका शिक्षण केवल विद्यालय में ही होता है। यह भाषा प्रयत्न पूर्वक अर्जित नहीं की जाती है बल्कि स्वतः ही हमारे व्यवहार का अंग बन जाती है। यही कारण है कि प्राथमिक कक्षा से ही हम मातृभाषा के रूप में साहित्य का अध्ययन प्रारम्भ कर देते हैं।

भाषा शिक्षण का अर्थ आदत के रूप में भाषाई कौशलों का विकास करना है। भाषा शिक्षण में मुख्यतः कौशल शिक्षण पर अधिक बल देना आवश्यक है जिससे छात्र सुनी हुई भाषा को समझ सकें, उसे शुद्ध रूप में बोल सकें, उसका उच्चारण शुद्ध रूप में कर सकें, प्रभावी तथा सहज रूप में लिखित सामग्री को पढ़ कर समझ सकें तथा अपने भावों और विचारों को शुद्ध तथा प्रभावपूर्ण ढंग से लिख सकें। भाषाई कौशल के विकास कि सफलता तथा असफलता कुछ हद तक अध्यापक की कार्यशैली पर निर्भर करती है। अध्यापक परिस्थितियों के अनुकूल नई-नई विधियों तथा प्रविधियों के माध्यम से छात्रों में भाषाई कौशलों का विकास करता है परन्तु छात्र में अध्ययन के प्रति स्वतः ही जागृति एवं प्रेरणा होती है तो विधियों एवं प्रविधियों का महत्त्व कम हो जाता है।

अन्य भाषा के रूप में हिन्दी का शिक्षण-प्रशिक्षण देश के सभी राज्यों में अनिवार्य है। हिन्दी देश को जोड़ने वाली भाषा है। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के सभी सामान्य जनों के सम्पर्क व्यवहार कि भाषा हिन्दी है। साथ ही यह देश की राजभाषा भी है। इसे देश की राष्ट्रभाषा बनाने के लिए सरकार सदैव प्रयत्नशील है।

सम्पूर्ण भारत में (तमिलनाडु के अतिरिक्त) मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन द्वितीय भाषा तृतीय भाषा तथा विदेशी भाषा के रूप में हो रहा है। द्वितीय और तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन प्रत्येक राज्य की अपनी शिक्षा नीति के अनुसार अलग-अलग कक्षा स्तर से आरम्भ होता है।

वर्तमान में तमिलनाडु (केवल सरकारी विद्यालयों) के अतिरिक्त दक्षिण भारत की विद्यालयीन शिक्षा में हिन्दी द्वितीय अथवा तृतीय भाषा के रूप में सीखी-सिखाई जाती है। तमिलनाडु के सरकारी विद्यालयों के अतिरिक्त वहाँ के प्राइवेट विद्यालयों में आजकल हिन्दी की पढ़ाई होने लगी है। आंध्र प्रदेश में तृतीय भाषा के रूप में कक्षा-8 से 10 तक, कर्नाटक और केरल में तृतीय भाषा के रूप में कक्षा 6 से 10 तक पढ़ाई जाती है। साथ ही प्राइवेट विद्यालयों (भाषाई अल्पसंख्यकों के द्वारा संचालित विद्यालयों में हिन्दी की पढ़ाई प्रथम भाषा के रूप में होती है। कर्नाटक के सरकारी विद्यालयों में हिन्दी तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। पाँच वर्षों की पढ़ाई के बावजूद भी छात्र अपनी अभिव्यक्ति कौशल में संतोषजनक सक्षम नहीं हो पाते हैं। जैसे-जैसे वे हिन्दी में बोला हुआ और लिखे हुये अंश को समझने में सक्षम तो हो जाते हैं परन्तु अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है चाहे वह वाक्य संरचना सम्बन्धी हो अथवा उच्चारण सम्बन्धी वे सर्वदा पीछे रह जाते हैं। हिन्दी अध्ययन के सम्बन्ध में उत्तर-प्रदेश सहित सम्पूर्ण हिन्दी भाषी क्षेत्र में कक्षा-1 से लेकर 12 तक हिन्दी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है और इसी कारण इन प्रदेशों के विद्यार्थी लेखन क्षमता से लेकर भावभिव्यक्ति क्षमता तक हमेशा ही आगे रहते हैं।

1.1.1 भाषा

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं और इसके लिये हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है। किसी भाषा की सभी ध्वनियों के प्रतिनिधि स्वन एक व्यवस्था में मिलकर एक सम्पूर्ण भाषा की अवधारणा बनाते हैं। व्यक्त नाद की वह समष्टि जिसकी सहायता से किसी एक समाज या देश के लोग अपने मनोगत भाव तथा विचार एक दूसरे से प्रकट करते हैं। मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह जिनके द्वारा मन की बात बताई जाती है जैसे बोली, जबान, वाणी विशेष।

सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा आभ्यंतर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे आभ्यंतर के निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है।

इस समय सारे संसार में प्रायः हजारों प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं जो साधारणतः अपने भाषियों को छोड़ और लोगों की समझ में नहीं आतीं। अपने समाज या देश की भाषा तो लोग बचपन से ही अभ्यस्त होने के कारण अच्छी तरह जानते हैं, पर दूसरे देशों या समाजों की भाषा बिना अच्छी तरह सीखे नहीं आती। भाषा विज्ञान के ज्ञाताओं ने भाषाओं

के आर्य, सेमेटिक, हेमेटिक आदि कई वर्ग स्थापित करके उनमें से प्रत्येक की अलग अलग शाखाएँ स्थापित की हैं और उन शाखाओं के भी अनेक वर्ग-उपवर्ग बनाकर उनमें बड़ी बड़ी भाषाओं और उनके प्रांतीय भेदों, उपभाषाओं अथवा बोलियों को रखा है जैसे हिन्दी भाषा भाषाविज्ञान की दृष्टि से भाषाओं के आर्य वर्ग की भारतीय आर्य शाखा की एक भाषा है; और ब्रजभाषा, अवधी, बुन्देलखण्डी आदि इसकी उपभाषाएँ या बोलियाँ हैं। पास-पास बोली जानेवाली अनेक उपभाषाओं या बोलियों में बहुत कुछ साम्य होता है और उसी साम्य के आधार पर उनके वर्ग या कुल स्थापित किए जाते हैं। यही बात बड़ी-बड़ी भाषाओं में भी है जिनका पारस्परिक साम्य उतना अधिक तो नहीं पर फिर भी बहुत कुछ होता है।

संसार की सभी बातों की भाँति भाषा का भी मनुष्य की आदिम अवस्था के अव्यक्त नाद से अब तक बराबर विकास होता आया है; और इसी विकास के कारण भाषाओं में सदा परिवर्तन होता रहता है। भारतीय आर्यों की वैदिक भाषा से संस्कृत और प्राकृतों का, प्राकृतों से अपभ्रंशों का और अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है।

प्रायः भाषा को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिये लिपियों की सहायता लेनी पड़ती है। भाषा और लिपि, भाव व्यक्तीकरण के दो अभिन्न पहलू हैं। एक भाषा कई लिपियों में लिखी जा सकती है और दो या अधिक भाषाओं की एक ही लिपि हो सकती है। उदाहरणार्थ पंजाबी, गुरूमुखी तथा शाहमुखी दोनों में लिखी जाती है जबकि हिन्दी, मराठी, संस्कृत, नेपाली इत्यादि सभी देवनागरी में लिखी जाती हैं। भाषा को प्राचीन काल से ही परिभाषित करने की कोशिश की जाती रही है। इसकी कुछ मुख्य परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं–

- भाषा शब्द संस्कृत के भाष् धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाए।
- प्लेटो ने सोफिस्ट में विचार और भाषा के सम्बन्ध में लिखते हुए कहा है कि विचार और भाषा में थोड़ा ही अन्तर है।
- विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है और वही शब्द जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।
- स्वीट के अनुसार ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।
- वेन्द्रीय कहते हैं कि भाषा एक तरह का चिह्न है। चिह्न से आशय उन प्रतीकों से है जिनके द्वारा मानव अपना विचार दूसरों के समक्ष प्रकट करता है। ये प्रतीक कई प्रकार के होते हैं जैसे नेत्रग्राह्य, श्रोत्र ग्राह्य और स्पर्श ग्राह्य। वस्तुतः भाषा की दृष्टि से श्रोत्रग्राह्य प्रतीक ही सर्वश्रेष्ठ है।
- ब्लाक तथा ट्रेगर- भाषा यादृच्छिक भाष् प्रतिकों का तंत्र है जिसके द्वारा एक सामाजिक समूह सहयोग करता है।
- सुत्वा - भाषा यादृच्छिक भाष् प्रतीकों का तंत्र है जिसके द्वारा एक सामाजिक समूह के सदस्य सहयोग एवं सम्पर्क करते हैं।

- इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका– भाषा को यादृच्छिक भाष् प्रतिकों का तंत्र है जिसके द्वारा मानव प्राणी एक सामाजिक समूह के सदस्य और सांस्कृतिक साझीदार के रूप में एक सामाजिक समूह के सदस्य सम्पर्क एवं संप्रेषण करते हैं।

  "भाषा यादृच्छिक वाचिक ध्वनि-संकेतों की वह पद्धति है, जिसके द्वारा मानव परम्परा विचारों का आदान-प्रदान करता है।" स्पष्ट ही इस कथन में भाषा के लिए चार बातों पर ध्यान दिया गया है-

- भाषा एक पद्धति है, यानी एक सुसम्बद्ध और सुव्यवस्थित योजना या संघटन है, जिसमें कर्ता, कर्म, क्रिया, आदि व्यवस्थिति रूप में आ सकते हैं।
- भाषा संकेतात्कम है अर्थात् इसमे जो ध्वनियाँ उच्चारित होती हैं, उनका किसी वस्तु या कार्य से सम्बन्ध होता है। ये ध्वनियाँ संकेतात्मक या प्रतीकात्मक होती हैं।
- भाषा वाचिक ध्वनि-संकेत है, अर्थात् मनुष्य अपनी वागिन्द्रिय की सहायता से संकेतों का उच्चारण करता है, वे ही भाषा के अंतर्गत आते हैं।
- भाषा यादृच्छिक संकेत है। यादृच्छिक से तात्पर्य है ऐच्छिक, अर्थात् किसी भी विशेष ध्वनि का किसी विशेष अर्थ से मौलिक अथवा दार्शनिक सम्बन्ध नहीं होता। प्रत्येक भाषा में किसी विशेष ध्वनि को किसी विशेष अर्थ का वाचक 'मान लिया जाता' है। फिर वह उसी अर्थ के लिए रूढ़ हो जाता है। कहने का अर्थ यह है कि वह परम्परानुसार उसी अर्थ का वाचक हो जाता है। दूसरी भाषा में उस अर्थ का वाचक कोई दूसरा शब्द होगा।

हम व्यवहार में यह देखते हैं कि भाषा का सम्बन्ध एक व्यक्ति से लेकर सम्पूर्ण विश्व तक है। व्यक्ति और समाज के बीच व्यवहार में आने वाली इस परम्परा से अर्जित सम्पत्ति के अनेक रूप हैं। समाज सापेक्षता भाषा के लिए अनिवार्य है, ठीक वैसे ही जैसे व्यक्ति सापेक्षता। भाषा संकेतात्मक होती है अर्थात् वह एक 'प्रतीक स्थिति' है। इसकी प्रतीकात्मक गतिविधि के चार प्रमुख संयोजक हैः दो व्यक्ति-एक वह जो संबोधित करता है, दूसरा वह जिसे संबोधित किया जाता है, तीसरी संकेतित वस्तु और चौथी-प्रतीकात्मक संवाहक जो संकेतित वस्तु की ओर प्रतिनिधि भंगिमा के साथ संकेत करता है। विकास की प्रक्रिया में भाषा का दायरा भी बढ़ता जाता है। यही नहीं एक समाज में एक जैसी भाषा बोलने वाले व्यक्तियों का बोलने का ढंग, उनकी उच्चारण-प्रक्रिया, शब्द-भंडार, वाक्य-विन्यास आदि अलग-अलग हो जाने से उनकी भाषा में पर्याप्त अन्तर आ जाता है। इसी को शैली कह सकते हैं।

1.1.2 भाषा विभाषा और बोली

बोली, विभाषा और भाषा का मौलिक अन्तर बता पाना कठिन है, क्योंकि इसमें प्रमुख अन्तर व्यवहार-क्षेत्र के विस्तार पर निर्भर है। वैयक्तिक विविधता के चलते एक समाज में चलने वाली एक ही भाषा के कई रूप दिखाई देते हैं। मुख्य रूप से भाषा के इन रूपों को हम इस प्रकार देखते हैं-

- बोली
- विभाषा
- भाषा (अर्थात् परिनिष्ठित या आदर्श भाषा)

- **बोली**

बोली और भाषा में अन्तर होता है। यह भाषा की छोटी इकाई है। इसका सम्बन्ध ग्राम या मण्डल अर्थात सीमित क्षेत्र से होता है। इसमें प्रधानता व्यक्तिगत बोलचाल के माध्यम की रहती है और देशज शब्दों तथा घरेलू शब्दावली का बाहुल्य होता है। यह मुख्य रूप से बोलचाल की भाषा है, इसका रूप (लहजा) कुछ-कुछ दूरी पर बदलते पाया जाता है तथा लिपिबद्ध न होने के कारण इसमें साहित्यिक रचनाओं का अभाव रहता है। व्याकरणिक दृष्टि से भी इसमें विसंगतियाँ पायी जाती है।

- **विभाषा**

विभाषा का क्षेत्र बोली की अपेक्षा विस्तृत होता है यह एक प्रान्त या उपप्रान्त में प्रचलित होती है। एक विभाषा में स्थानीय भेदों के आधार पर कई बोलियाँ प्रचलित रहती हैं। विभाषा में साहित्यिक रचनाएँ मिल सकती हैं।

- **भाषा**

भाषा या परिनिष्ठित भाषा अथवा आदर्श भाषा, विभाषा की विकसित स्थिति हैं। इसे राष्ट्र- भाषा या टकसाली-भाषा भी कहा जाता है। प्रायः देखा जाता है कि विभिन्न विभाषाओं में से कोई एक विभाषा अपने गुण-गौरव, साहित्यिक अभिवृद्धि, जन- सामान्य में अधिक प्रचलन आदि के आधार पर राजकार्य के लिए चुन ली जाती है और उसे राजभाषा के रूप में या राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया जाता है।

1.1.3 राज्यभाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा

किसी प्रदेश की राज्य सरकार के द्वारा उस राज्य के अंतर्गत प्रशासनिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे राज्यभाषा कहते हैं। यह भाषा सम्पूर्ण प्रदेश के अधिकांश जन-समुदाय द्वारा बोली और समझी जाती है। प्रशासनिक दृष्टि से सम्पूर्ण राज्य में सर्वत्र इस भाषा को महत्त्व प्राप्त रहता है।

भारतीय संविधान में राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों के लिए हिन्दी के अतिरिक्त २२ अन्य भाषाएं राजभाषा स्वीकार की गई हैं। राज्यों की विधानसभाएं बहुमत के आधार पर किसी एक भाषा को अथवा चाहें तो एक से अधिक भाषाओं को अपने राज्य की राज्यभाषा घोषित कर सकती हैं।

राष्ट्रभाषा सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है। प्रायः वह अधिकाधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा होती है। प्रायः राष्ट्रभाषा ही किसी देश की राजभाषा होती है।

1.1.4 हिन्दी भाषा का इतिहास

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। हिन्दी भाषा व साहित्य के जानकार अपभ्रंश की अंतिम अवस्था 'अवहट्ठ' से हिन्दी का उद्भव स्वीकार करते हैं। चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने इसी अवहट्ठ को पुरानी हिन्दी' नाम दिया।

अपभ्रंश की समाप्ति और आधुनिक भारतीय भाषाओं के जन्मकाल के समय को संक्रांतिकाल कहा जा सकता है। हिन्दी का स्वरूप शौरसेनी और अर्धमागधी अपभ्रंशों से विकसित हुआ है। 1000 ई. के आस-पास इसकी स्वतंत्र सत्ता का परिचय मिलने लगा था, जब अपभ्रंश भाषाएँ साहित्यिक संदर्भों में प्रयोग में आ रही थीं। यही भाषाएँ बाद में विकसित होकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के रूप में अभिहित हुई। अपभ्रंश का जो भी कथ्य रूप था- वही आधुनिक बोलियों में विकसित हुआ।

अपभ्रंश के सम्बन्ध में 'देशी' शब्द की भी बहुधा चर्चा की जाती है। वास्तव में 'देशी' से देशी शब्द एवं देशी भाषा दोनों का बोध होता है। प्रश्न यह कि देशीय शब्द किस भाषा के थे? भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में उन शब्दों को 'देशी' कहा है 'जो संस्कृत के तत्सम एवं सद्भव रूपों से भिन्न है। ये 'देशी' शब्द जनभाषा के प्रचलित शब्द थे, जो स्वभावतः अप्रभंश में भी चले आए थे। जनभाषा व्याकरण के नियमों का अनुसरण नहीं करती, परन्तु व्याकरण को जनभाषा की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना पड़ता है, प्राकृत-व्याकरणों ने संस्कृत के ढाँचे पर व्याकरण लिखे और संस्कृत को ही प्राकृत आदि की प्रकृति माना। अतः जो शब्द उनके नियमों की पकड़ में न आ सके, उनको देशी संज्ञा दी गई।

1.1.5 भारत में हिन्दी शिक्षण एवं अधिगम

हिन्दी शिक्षण में छात्रों को सीखने के अनुभव प्रदान करने के लिए शिक्षक द्वारा कक्षा में परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती हैं। समुचित परिस्थियों को उत्पन्न करने के लिए शिक्षकों को आयाम, आव्यूह, विधियाँ, शिक्षण सूत्र, प्रविधियाँ तथा सहायक प्रणाली का उपयोग करना होता है। हिन्दी शिक्षण की आधुनिक शिक्षण विधियों को समझने के लिए यह आवश्यक है कि पहले आयाम को समझ लिया जाए। इस अध्याय के आरम्भ में शिक्षण विधियों से सम्बन्धित प्रत्ययों को समझा जाए और उनके पारस्परिक सम्बन्धों कि जानकारी हो। यह वास्तव में शिक्षणशास्त्र का ज्ञानात्मक पक्ष माना जाता है। शिक्षण विधियाँ शिक्षाशास्त्र की मुख्य पाठ्यवस्तु हैं।

1.1.6 शिक्षण विधियाँ

शिक्षण विधियों के निर्धारण एवं चयन का आधार पाठ्यवस्तु होती है। पाठ्यवस्तु की प्रकृति के आधार पर शिक्षण विधियाँ का उपयोग करते हैं। हिन्दी शिक्षण की दो विधाएँ-भाषा तथा साहित्य भाषा की पाठ्यवस्तु वैज्ञानिक है इसलिए भाषा प्रयोगशाला का उपयोग करते हैं। साहित्य की पाठ्यवस्तु कलात्मक है इसलिए नाटक विधि का उपयोग किया जाता है। हरबर्ट शिक्षण आयाम में शिक्षण विधियों का उपयोग करते हैं। शिक्षण विधि अमूर्त प्रत्यय है क्रियाओं से इसकी प्रस्तुति की जाती है। प्रस्तुतीकरण के ढंग को शिक्षण विधि कहते हैं।

1.1.7 भाषा अर्जन

भाषा मानव जीवन की एक सामान्य व सतत् प्रक्रिया है, जिसे मानव को ईश्वर द्वारा दिया अमूल्य उपहार कहा जाता है। भाषा का आरम्भ मानव के जन्म के साथ ही प्रारम्भ हो जाता है। विभिन्न कौशल जैसे- बोलना, सुनना, पढ़ना, लिखना, समझना को पूरा करते हुये व्यक्ति भाषा में निपुणता प्राप्त करता है। आरम्भ में बालक भूख लगने पर रोता है तो माता समझ जाती है कि बालक को भूख लगी है। फिर धीरे-धीरे परिवार के सम्पर्क में रहकर आपसी संवादों को सुनकर बालक उनका अनुकरण करता है और इस तरह वह भाषा के क्षेत्र में पारंगत हो जाता है। इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि भाषा अनुकरण की वस्तु है तथा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। बालक के भाषा अर्जन के सन्दर्भ में अर्जन प्रक्रिया एवं उसकी प्रकृति का महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा अर्जन में बालक अनेक युक्तियों का प्रयोग करता है। जैसे अनुकरण, अभ्यास, बारंबारता एवं संक्षिप्तता इत्यादि।

1.1.8 भाषा शिक्षण

भाषा भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम तथा साधन होती है। भाषा की प्रमुख क्रियाएँ- बोलना, लिखना, पढ़ना तथा सुनना है। भाषा कि शुद्धता से तात्पर्य शुद्ध बोलना, शुद्ध लिखना, शुद्ध पढ़ना तथा शुद्ध सुनने से होता है। इन क्रियाओं की शुद्धता व्याकरण पर आधारित होती है अर्थात व्याकरण से इनमें शुद्धता आती है। भाषा का अमूल्य वरदान मनुष्य को ही प्राप्त है। भाषा ईश्वरीय व प्रकृति की देन है परन्तु भाषा का निर्माण व्यक्ति ने स्वयं किया है। विश्व में अनेक भाषाओं का निर्माण हुआ है जिससे वहाँ के निवासी अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति एवं सम्प्रेषण करते हैं। भाषा मानवीय कलाकृति है। मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं और समाज में रहने के कारण उसे सदैव विचारों का आदान-प्रदान करना पड़ता है, इस विचार विनिमय का सर्वोत्तम एवं मानवीय साधन भाषा है। इस प्रकार जिस वार्तालाप या लेख के माध्यम से अपने विचारों को प्रकट करते हैं वही भाषा है। भाषा के दो रूप हैं 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा। मनुष्य अपने विचारों को प्रकट करने के लिए कुछ शब्दों का उपयोग करता है और यह शब्द किन्हीं सार्थक प्रतीकों से निर्मित होते हैं। इसी प्रकार लेखन के अन्तर्गत भी सार्थक ध्वनि प्रतीक चह्नों का आश्रय लेते हैं। अतएव भाषा सार्थक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से इसके प्रयोक्ता या श्रोता परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। विचारों का आदान-प्रदान मौखिक या लिखित दोनों रूपों में हो सकता है।

1.1.9 हिन्दी भाषा शिक्षण

राष्ट्र के निर्माण के कार्य में भाषा का विशेष महत्व है। भाषा के माध्यम से छात्र ज्ञान-विज्ञान के अनेकानेक विषयों का अध्ययन करता है। यदि छात्र का अधिकार भाषा पर नहीं होता तो वह ज्ञान के अन्य किसी भी क्षेत्र में प्रगति नहीं कर पाता। भाषा ही हमारे जीवन का आधार है किसी भी जनतंत्र की सफलता उसके नागरिकों के चिन्तन पर निर्भर करती है और इस चिन्तन में भाषा की भूमिका रहती है। भारतीय गणराज्य के 7 राज्यों में छात्रों की मातृभाषा हिन्दी है और अन्य राज्यों में इसका स्थान राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के रूप में द्वितीय भाषा का होता है। जिन राज्यों में हिन्दी मातृभाषा के रूप में व्यवहृत है वहाँ के लोगों का यह विशेष कर्त्तव्य है कि वे छात्रों के भाषा ज्ञान को बढ़ाएँ और उन्हें इस बात की प्रेरणा दें कि वह हिन्दी पर अधिकार प्राप्त कर सकें। अन्य किसी भी विषय के पढ़ाने की तुलना में मातृभाषा का पढ़ाना बहुत अधिक जटिल कार्य है। इसकी शिक्षा में इतने विभिन्न प्रकार की योग्यताओं का समावेश रहता है कि उन्हें विश्लिष्ट करके अलग-अलग देख पाना संभव नहीं है। वास्तव में मातृभाषा की शिक्षा के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से सामने रखना बहुत कठिन है। मातृभाषा शिक्षण के कुछ ऐसे सामान्य सूत्र दिए गए हैं जिनको ध्यान में रखने से हमें मातृभाषा के प्रति छात्रों की रुचि के विकास में सहायता मिल सकेगी।

भाषा मानव जीवन की एक बहत ही सहज प्रक्रिया है इसे बच्चा अनायास खेल-खेल में सीखने लगता है और परिस्थिति के अनुसार उसकी भाषा का विकास होता चला जाता है। सीखने वाले पर कोई भाषा थोपी नहीं जा सकती इसका विकास उसके अन्दर से स्वयं होना चाहिए। भाषा का शिक्षण यथासंभव अनौपचारिक होना चाहिए पढ़ाने में बहुत अधिक औपचारिकता आ जाने से पढ़ाई जाने वाली भाषा का स्वरूप कृत्रिम हो जाने की संभावना है। भाषा को सीखने और सिखाते समय छात्र और अध्यापक दोनों को ही आनन्द की अनुभूति होनी चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो भाषा विकास में अवश्य ही कहीं कमी है। वाह्य जगत के प्रति प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न होती है। प्रतिक्रिया की विभिन्नता भाषा के प्रयोग में सहज रूप से अभिव्यक्त होती है। छठी कक्षा के छात्रों में व्यक्तित्व की भिन्नता के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। किसी भी भाषा की सत्ता शून्य में नहीं रहती इसके माध्यम से यहाँ छात्रों की भाषा सम्बन्धी योग्यता बढ़ेगी। वहीं सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पारिवारिक, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक विषयों में रुचि बढ़ेगी। छात्रों को ऐसा लगना चाहिए कि वे एक साथ पढ़ रहे हैं। भाषाओं का वर्गीकरण मोटे तौर पर सुनकर, बोलने, पढ़ने, लिखने और सोचने की योग्यता में किया जा सकता है। भाषा की अच्छी शिक्षा में इस प्रकार की योग्यताओं का विकास किया जाएगा इसके लिए आवश्यक होगा कि छात्रों को सुनने, बोलने, लिखने और विचार करने के अधिक से अधिक अवसर दिए जाएँ। कक्षा में निष्क्रिय स्रोता बने रहकर ही छात्र भाषा के अंगों पर अधिकार नहीं प्राप्त कर सकते हैं। भाषा की विश्लेषण योग्यता के ऊपर लिखित सभी योग्यताओं का विकास करने में सहायक होती है इसलिए भाषा विश्लेषण की क्षमता छात्रों में प्रारम्भ से ही उत्पन्न करनी चाहिए।

1.1.10 हिन्दी भाषा शिक्षण की समस्याएँ

भाषा विज्ञान की दृष्टि से कठिनाइयों के अतिरिक्त कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ भी आती हैं। जो इस प्रकार हैं–

पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याएँ- हिन्दी का शिक्षण कब प्रारम्भ किया जाए, किस स्तर पर कितना पाठ्यक्रम रखा जाए, भाषा कितनी पढ़ाई जाए और साहित्य कितना पढ़ाया जाए तथा सरकारी काम-काज के लिए कितना सिखाया जाए? इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त कर लेने से पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं को दिशा मिल सकती है।

पाठ्यपुस्तकों की समस्याएँ- अहिन्दी भाषी प्रदेशों की अपनी विशिष्ट समस्याएँ हैं, उनका ध्यान रखते हुये हिन्दी की पाठ्यपुस्तकें तैयार होनी चाहिए। दक्षिणापथ, पूर्वाञ्चल, पश्चिमोत्तर प्रदेशों की समस्याओं को दृष्टिगत रखकर ही पुस्तकें तैयार करना उचित है। एक ही पुस्तक सभी अहिन्दी भाषी प्रदेशों के लिए उपयुक्त नहीं रहेगी।

अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी अध्यापक- हिन्दी के उपयुक्त अध्यापकों की नियुक्ति भी आवश्यक है। हिन्दी अध्यापकों में कुछ सामान्य योग्यता का होना आवश्यक है। केरल तथा असम को छोड़कर शेष सभी अहिन्दी भाषी राज्यों ने हाईस्कूल तक की योग्यता को पर्याप्त माना है। किन्तु अन्य प्रदेश हिन्दी की योग्यता का स्तर ऊँचा रखने के लिए हिन्दी-संस्थाओं की उन परीक्षाओं को अनिवार्य कर रखा है जिनका स्तर स्नातक के समकक्ष है।

हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति का निर्माण- अहिन्दी भाषी प्रदेश के छात्र हिन्दी क्यों सीखें, हिन्दी को मातृभाषा के रूप में सीखें या अन्य भाषा के रूप में सीखें। हिन्दी न सीखने से क्या हानि है और क्या हिन्दी अक्षम और दरिद्र भाषा है। इन प्रश्नों के उत्तर के विषय में भ्रम पैदा किया जा रहा है। अतः अनेक अहिन्दी भाषी छात्र हिन्दी को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं।

व्यावहारिक हिन्दी की समस्याएँ-

- आज हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया में बहुत से शब्दों, पदों, अभिव्यक्तियों के ऐसे जटिल हिन्दी समतुल्य शब्द निर्धारित कर दिए गए जो हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल नहीं हैं।
- आज कार्यालयी हिन्दी में कामकाज इसलिए कठिन है क्योंकि इसको वास्तविक व्यवहार में नहीं लाया जाता है इसका प्रयोग केवल राजभाषा-नियमों के डंडे से बचने के लिए या फिर राजभाषा-पुरस्कार पाने के लिए ही किया जाता है।
- एक सबसे बड़ी समस्या सत्ता और प्रशासन के प्रतिष्ठानों में बैठे अधिकारियों और कार्मिकों की पद-प्रतिष्ठा और इससे जुड़ी मनो-सामाजिक दृष्टि की है। अनेक अधिकारियों कर्मचारियों को कार्यालय या समाज में हिन्दी प्रयोग करने पर अपने अंग्रेजी ज्ञान पर प्रश्नचिह्न सा लगता नजर आता है और यह स्थिति उन्हें बिल्कुल बर्दाश्त नहीं उन्हें लगता है कि हिन्दी के प्रयोग करने से लोगों को यह लगेगा कि उन्हें अंग्रेजी नहीं आती। अच्छी हिन्दी जानते हुए भी अनभिज्ञ दिखाई पड़ना और अच्छी अंग्रेजी न जानते हुए भी अंग्रेजीदां दिखाई देते रहने की यह मानसिकता हमारे सत्ता-समाज

में बहुत गहराई से लोगों के दिलों दिमाग पर हावी है। यह अंग्रजों द्वारा दी गई एक प्रकार की मानसिक गुलामी है और यह एक बहुत बड़ा सच है कि मानसिक रूप से गुलाम व्यक्ति सफल दिख तो सकता है लेकिन सफल हो नहीं सकता।

- हिन्दी भाषा के विकास में कई तरह के बाधाओं का डेरा लगा हुआ है। हिन्दी लिखने के साधन तक का सही तरह से प्रचार नहीं हो पाता है। इस कारण कई लोगों को हिन्दी लिखना भी अच्छे से नहीं आता है। इसके अलावा कई समाचार पत्र वाले भी हिन्दी भाषा लिखने के साधन की जानकारी लोगों तक नहीं पहुँचाते हैं।

1.1.11 व्यावहारिक हिन्दी

शिक्षाशास्त्र का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है कि शिक्षण में पाठ्यक्रम की अपेक्षा शिक्षक का अधिक महत्व है। यहाँ तक आज शैक्षिक तकनीकी भी उसकी उपेक्षा नहीं कर सकती है। विषय-वस्तु को बोधगम्य करने की अपेक्षा शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव बालकों के लिए विशेष महत्व राखता है। क्योंकि शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक धुरी के सादृश्य कार्य करती है। शिक्षक का व्यक्तित्व, प्रस्तुतीकरण शिक्षक के आदर्श सीखने वाले नवयुवकों में अभिरुचि एवं अभिवृत्ति का विकास करते हैं। सीखने के लिए प्रेरणा भी देते हैं।

शिक्षक बालकों में सही दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए उत्तरदाई हैं।यदि हिन्दी शिक्षक निष्पक्ष तथा ईमानदारी से कार्य करे तो विद्यालय के अन्य विषयों की अपेक्षा स्वदेश प्रेम, अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास सुगमता से कर सकता है।देश की प्रगति के लिए सुयोग्य नागरिकों का विकास कर सकता है। शिक्षक का अंतिम उद्देश्य मानवता का विकास करना है। इसमें हिन्दी शिक्षक महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षक की तुलना एक जलते हुये दीपक से की है। हिन्दी शिक्षक को भाषा तथा साहित्य दोनों का भरपूर ज्ञान होना चाहिए। भारतीय शिक्षा प्रणाली में हिन्दी भाषा एवं साहित्य को उतना महत्व नही दिया गया जितने की वह अधिकारी हैं। राष्ट्रीय हिन्दी को समझने के लिए भाषा का भरपूर ज्ञान होना आवश्यक है। विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास हिन्दी के अध्ययन बिना संभव नहीं हो सकता।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

समस्या की उत्पत्ति का मूल कारण आज इस इण्टरनेट के युग में लोग लिखना भूल रहे हैं, ज्यादातर व्यक्ति दो प्रकार की भाषा प्रयोग करना पसन्द कर रहे हैं। आज सोशल मीडिया के परिप्रेक्ष्य में लोग अंग्रेजी को देवनागरी लिपि में लिखना पसन्द कर रहे हैं, जिस कारण हिन्दी का अस्तित्व आज खतरे में दिखाई दे रहा है। अनेकानेक अध्ययनों के आधार पर पता चलता है कि अब हिन्दी पर अंग्रेजी को प्राथमिकता देने की परम्परा प्रचलन में आ रही है। सरकारी विद्यालयों से लेकर निजी विद्यालयों में अंग्रेजी को ही महान बताया जा रहा है। अभिभावक आज अपने बच्चों को अंग्रेजी का चोला पहनाना अधिक पसन्द करते हैं। हमारे देश के आम जनमानस की बोल-चाल की भाषा प्राचीन समय से हिन्दी रही है।

हिन्दी आम जनमानस की आत्मा को जोड़ती थी। आज अंग्रेज़ियत के प्रभाव के फलस्वरूप हिन्दी रसातल को जा रही है। हम एवं हमारी सरकारें हिन्दी पखवाड़ा और हिन्दी दिवस मनाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। इस कारण बच्चे हिन्दी से दूर हो रहे हैं।

वर्तमान समय में इन्हीं सब कारणों से हिन्दी गर्त में जा रही है, जो भारत जैसे देश के लिए सोचनीय बात है। आज दुनिया के अनेक देश अपने मातृभाषा का उपयोग कर विकसित राष्ट्र हो गए और हम तथा हमारा देश अंग्रेज़ियत के गुलाम हो रहे हैं। जब मैंने अतर्रा नगर क्षेत्र के बाज़ार की दुकानों, मकानों, संस्थाओं इत्यादि में लगे विभिन्न बोर्डों, होर्डिंगों, बैनरों इत्यादि का सर्वेक्षण किया तो ज्ञात हुआ कि सामान्यजन व्यावहारिक हिन्दी के लेखन में बहुत अधिक अशुद्धियाँ करते हैं तथा उनके पास जानकारी का भी अभाव है।

उनको प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर इसके विषय में नहीं बताया गया, जिस कारण आज भी वह इसी गलती को दोहराते जा रहे हैं। इन स्थितियों को देखकर मेरे मन में जिज्ञासा हुई कि यह हिन्दी के लिए बहुत ही संवेदनशील विषय है और मुझे सामान्यजनों में व्यावहारिक हिन्दी का अध्ययन करना चाहिए।

1.3 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध कार्य के लिए जिस समस्या का चयन किया गया है, उसका शीर्षक इस प्रकार है–

"व्यावहारिक हिन्दी: वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएँ।"

1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

भारत एक विकासशील देश है, स्वतन्त्रता के पश्चात भारत के प्रत्येक क्षेत्र तथा राज्यों के विकास के लिए अनेक प्रशंसनीय कदम उठाए हैं। भारत सरकार तथा सम्बन्धित अन्य राज्य सरकारों ने शिक्षा के क्षेत्र विभिन्न प्रयास किए हैं, परन्तु उन उद्देश्यों को अभी भी पूरा नहीं किया जा सका है। आज भी भारत के विभिन्न राज्यों में साक्षरता की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। राष्ट्रीय स्तर पर अभी 75 प्रतिशत से नीचे ही है। यह स्थिति भारत जैसे देश के लिए ठीक नहीं। जहाँ साक्षरता ठीक है उनमें से अनेक क्षेत्रों में गुणवत्ता की काफी कमी है। भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए मनुष्य संकेतों और प्रतीकों का सहारा लेता है। प्रत्येक भाषा इन वाक्य प्रतीकों के संकेत अर्थ निश्चित होते हैं और उस भाषा विशेष के सदस्य परस्परिक व्यवहार के लिए इनका प्रयोग करते हैं। डॉ. बाबू राम सक्सेना के अनुसार "जिन ध्वनि प्रतीकों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उसके समस्त रूप को भाषा कहते हैं।

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

किसी अध्ययन में समस्या या शोध कथन में प्रयुक्त शब्दों का पारिभाषी कारण से समस्या को विस्तार पूर्वक समझाया जा सकता है।

1.5.1 व्यावहारिक

व्यावहारिक अर्थात् जो व्यवहार के लिये उपयुक्त, ठीक या व्यवहार योग्य हो। व्यावहारिक का तात्पर्य कार्य, आचरण या रोज़मर्रा के मामलों को संभालने में अच्छे निर्णय से है। व्यावहारिक होने का मतलब लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विवेकपूर्ण निर्णय, संतुलन का होना और उसका उपयोग करना है।

1.5.2 हिन्दी

हिन्दी विश्व की एक प्रमुख भाषा है और भारत की एक राजभाषा हिन्दी के मानकीकृत रूप को मानक हिन्दी कहा जाता है। मानक हिन्दी में संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी–फ़ारसी शब्द कम हैं। हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं बल्कि राजभाषा है क्योंकि भारत के संविधान में राष्ट्रभाषा का कहीं उल्लेख या चर्चा नहीं है।

एथनोलॉग के अनुसार, हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है।

1.5.3 वर्तमान

इस समय जो भी हम देख रहे हैं, सुन रहे है, और महसूस करने के बाद जो भी इस समय में कर रहे हैं, वही वर्तमान है।

1.5.4 परिदृश्य

[scenario] According to Business Dictionary "Internally consistent verbal picture of a phenomenon, sequence of events or situation, based on certain assumptions and factor chosen by its creator."

प्रस्तुत लघु शोध में 'परिदृश्य' से तात्पर्य सामाजिक विज्ञान सम्बन्धी औपचारिक एवं अनौपचारिक वातावरण से है।

1.5.5 भावी

Swiftutors.com के अनुसार "भावी से तात्पर्य आने वाला पल जब तक नहीं आता है उसकी निश्चितता सदैव अनिश्चित बनी होती है क्योंकि भविष्य काल का एक हिस्सा है, उसे भविष्य काल कहते हैं।" प्रस्तुत लघु शोध में 'भावी' से तात्पर्य वर्ष 2023-2024 के बाद आने वाले समय से है।

1.5.6 संभावनाएँ

www.hindi2dictionary.com के अनुसार "संभावना का अर्थ किसी घटना या बात के सम्बन्ध में वह स्थिति जिसमें उसके पूर्ण होने की आशा हो । प्रस्तुत लघु शोध में " से तात्पर्य भविष्य में सामाजिक विज्ञान शिक्षण सम्बन्धी सुधारों के अनुमान से है।

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

- व्यावहारिक हिन्दी में व्याकरणजन्य त्रुटियों की पहचान करना।
- व्यावहारिक हिन्दी के प्रति जागरूकता का संवर्द्धन करना।
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना।
- व्यावहारिक हिन्दी के संवर्द्धन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

1.7 अध्ययन का परिसीमांकन

- प्रस्तुत शोध अतर्रा नगर क्षेत्र के बोर्ड/ होर्डिंग/बैनर में व्यावहारिक हिन्दी के प्रयोग तक सीमित है। इसमें केवल हिन्दी भाषा की त्रुटियों को सम्मिलित किया गया है।

1.8 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

शिक्षा गतिशील एवं चैतन्यमयी विचार प्रक्रिया है, जो बालक के आचार-विचार, व्यवहार एवं दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन ला देती है जिससे उसकी सुप्त प्रतिभाओं एवं सदगुणों का विकास होता है। इसी में शिक्षा प्रक्रिया की सार्थकता निहित है। किसी भी स्तर पर शोधकार्य तब तक उपयोगी नहीं हो सकता जब तक कि शिक्षा और समाज के लिए वह उपयोगी और सार्थक न हो। इस शोधकार्य का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि वर्तमान समय में अंग्रेजी भाषा को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है जिससे हिन्दी भाषा की ओर से लोगों का रुझान कम हो रहा है। अंग्रेजी विद्वता की परिभाषा बनती जा रही है। विशेष अवसरों पर हिन्दी के प्रति श्रद्धा दिखाकर हम अपने हिन्दी के प्रति कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। हिन्दी भाषा में कतिपय अनेक शोध अध्ययन किए जाने कि आवश्यकता है, जिससे हिन्दी की समृद्धि में अमूल्य योगदान दिया जा सके।

द्वितीय-अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

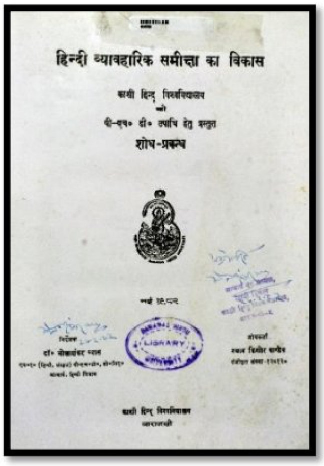
सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना शोध कार्य अंधे के तीर के समान होगा। इसके अभाव में व्यक्ति सही दिशा में एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता है, जब तक कि यह ज्ञात ना हो जाए इस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस-किस के द्वारा किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आए थे तब तक वह ना तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और ना ही उसकी रूपरेखा तैयार कर आगे बढ़ सकता है।

किसी भी विषय के किसी विशेष शोध प्रारूप को बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धान्त एवं शोधों से भलीभाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यावहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सिद्धान्त एवं सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा करनी होती है। संसार के समस्त प्राणियों में मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्र किए ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं- ज्ञान को एकत्र करना, उसे दूसरे तक पहुँचाना तथा ज्ञान में वृद्धि करना। यह तथ्य शोध कार्य में विशेष रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। शोध कार्य में सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन शोधकर्ता को नवीनतम् ज्ञान के शिखरों तक ले जाता है, जहाँ उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित निष्कर्ष एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहाँ रिक्तियाँ हैं, कहाँ निष्कर्ष विरोध है और कहाँ अनुसन्धान की पुनः आवश्यकता है। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण में दो शब्द हैं- साहित्य और समीक्षा। साहित्य शब्द परम्परागत अर्थ से भिन्न अर्थ प्रदान करता है। यह भाषा के सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता है जैसे-हिन्दी साहित्य, संस्कृत साहित्य और आंग्ल साहित्य। इस की विषयवस्तु के अंतर्गत गद्य, काव्य, नाटक आदि आते हैं। अनुसन्धान के क्षेत्र के साहित्य शब्द किसी विषय के अनुसन्धान के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की ओर संकेत करता है, जिसके अंतर्गत सैद्धान्तिक, व्यावहारिक तथा तथ्यात्मक शोध अध्ययन आते हैं। समीक्षा शब्द का अर्थ शोध के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की व्यवस्था करना एवं ज्ञान को विस्तृत करके यह दिखाना है कि उसके द्वारा किया गया अध्ययन इस क्षेत्र में एक योगदान होगा। साहित्य की समीक्षा का कार्य अत्यंत सृजनात्मक एवं थकाने वाला होता है क्योंकि शोधकर्ता को अपने अध्ययन को युक्तिपूर्ण कथन प्रदान करने के लिए प्राप्त ज्ञान को अपने ढंग से एकत्र करना होता है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसन्धान की समस्या से सम्बन्धित सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र-पत्रिकाओं एवं शोध अभिलेखों के अध्ययन आदि से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण एवं अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने का कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

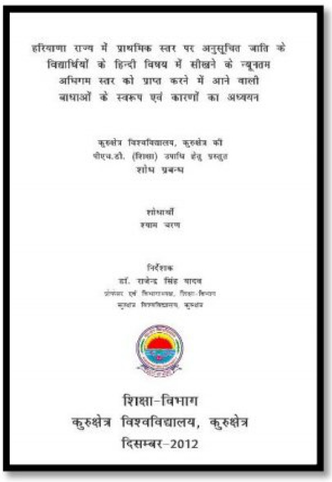
2.2 हिन्दी शिक्षण से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

शोधकर्ता को समस्या से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित जो शोधकार्य उपलब्ध हो पाये हैं उनका अध्ययन करके लघु शोध को तर्कपूर्ण व व्यावहारिक बनाने का प्रयास किया है। हिन्दी शिक्षण से सम्बन्धित कतिपय शोधकार्यों का विवरण इस प्रकार है–

- **श्याम किशोर पाण्डेय (1982)** में "हिन्दी व्यावहारिक समीक्षा का विकास" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने शोध में पाया कि 1857 के स्वतंत्रता संग्राम ने भारतीय जनजीवन को कई दृष्टियों से प्रभावित किया था। चूँकि साहित्य भी जन-जीवन की चेतना का ही प्रतिनिधित्व करता है इसलिए भारतेंदुयुग के साहित्य में उस परिवर्तित जीवन की व्यापक झलक मिलती है। भारतेन्दुकाल के लेखकों ने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से व्यावहारिक समीक्षा की सूत्रपात की।



- **श्याम चरण (2012)** "हरियाणा राज्य में प्राथमिक स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के हिन्दी विषय में सीखने के न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त करने में आने वाली बाधाओं के स्वरूप एवं कारणों का अध्ययन" इस शोध कार्य हेतु केवल हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों को चुना गया। इस शोध में हरियाणा के 4 जिलों के 400 बच्चों एवं 40 शिक्षकों को अध्ययन हेतु चयनित किया गया। इसमें केवल हरियाणा राज्य के अनुसूचित जाति के बच्चों को ही शामिल किया गया। 400 विद्यार्थियों में केवल 10 विद्यार्थियों ने ही हिन्दी विषय में न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति की। केवल 18.5 प्रतिशत विद्यार्थी दो अलग-अलग दक्षताओं में न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति कर पाए। 400 विद्यार्थियों में केवल 78 विद्यार्थी हैं जो भाषा की किसी भी दक्षता में न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त नहीं कर पाए। सुनना दक्षता में 66.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने ही न्यूनतम दक्षता स्तर की प्राप्ति की। बोलना दक्षता में 49.5 प्रतिशत विद्यार्थियों ने ही न्यूनतम दक्षता स्तर की प्राप्ति की। पठन दक्षता में केवल प्रतिशत विद्यार्थी ही न्यूनतम दक्षता को प्राप्त कर सके। लेखन दक्षता में केवल 3% विद्यार्थी ही न्यूनतम दक्षता स्तर की प्राप्ति कर सके। अर्थ बोधन दक्षता में केवल 39.5% विद्यार्थियों ने ही न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त किया।



- **स्वप्ना मल्लिक (2009)** "दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा के कौशल शिक्षण के सन्दर्भ में प्रचलित वर्तमान प्रविधियाँ एक आलोचनात्मक अध्ययन(बेंगलुरु महानगर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कन्नड़ भाषी छात्रों के विशेष सन्दर्भ में)" दक्षिण भारत के सन्दर्भ में यह देखा जाता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर हिन्दी पढ़ने वाले दो प्रकार के छात्र होते हैं, एक वे जिनकी मातृभाषा हिन्दी या या हिन्दी की कोई अन्य बोली होती है या कभी कभी हिन्दी तथा द्रविड़ से इतर कोई और भाषा उनकी मातृभाषा होती है तथा दूसरे वे जिनकी मातृभाषा द्रविड़ परिवार की कोई भाषा होती है, यही स्थिति हिन्दी अध्यापकों की है। इस अध्ययन में कर्नाटक के बेंगलुरु को शामिल किया गया है। इस अध्ययन में 2007 से 2011 तक हिन्दी की परीक्षा में शामिल होने वाले विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि हिन्दी अध्यापन में प्रयुक्त प्रविधियाँ कननड़ भाषी हिन्दी छात्रों की बोध तथा अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाने में कितनी सहायक है।यह अध्ययन बेंगलुरु महानगर के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में विभाजित है।कक्षा अध्यापन में छात्रों को सुनने का अधिकाधिक अवसर दिया जाता है।यह अवसर अध्यापकों अथवा सहपाटियों द्वारा प्रदान किया जाता है। छात्रों की बोलने सम्बन्धी अशुद्धियों का तत्काल सुधार किया जाता है।

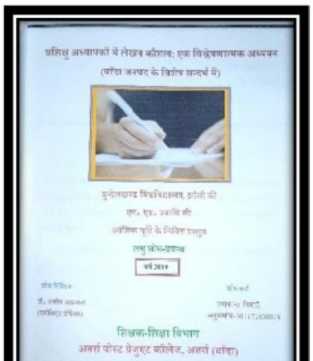

दक्षिण भारत में हिंदी भाषा के कौशल शिक्षण के संदर्भ में प्रचलित वर्तमान प्रविधियाँ : एक आलोचनात्मक अध्ययन

पी-एच.डी. हिंदी (भाषा प्रौद्योगिकी) उपाधि हेतु शोध प्रस्तुति

Š

भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, भाषा विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

- **रमाकान्त तिवारी (2019)** ने "प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" (बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में) नामक शीर्षक पर शोध किया और पाया कि—
  - 90 प्रतिशत प्रशिक्षुओं द्वारा किसी न किसी प्रकार की त्रुटि की गई हैं।
  - लगभग 20 प्रतिशत प्रशिक्षु श्रुत्रलेख लेखन में अधिक कमजोर हैं।
  - ज्यादातर विद्यार्थी सामान्य गति के साथ सुन्दर लेख नहीं लिख पाते हैं।
  - प्रशिक्षुओं द्वारा दीर्घ और ह्रस्व मात्रा सम्बन्धित त्रुटि की गई हैं।
  - ग्रामीण प्रशिक्षुओं द्वारा सर्वाधिक त्रुटियाँ की गई हैं।


प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
(बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में)

शिक्षक-शिक्षा विभाग
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

- **पंकज कुमार (2017)** ने "हिन्दी शिक्षण में आधुनिक तकनीक एवं चुनौतियाँ" नामक शीर्षक पर शोध किया और पाया कि—



  - आधुनिक आयाम के अंतर्गत प्रचुर मात्रा में हिन्दी सम्बन्धी विभिन्न सामग्री उपलब्ध है। किंतु अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध सामग्री की तुलना में यह उपलब्धता नगण्य है।
  - आंग्ल भाषा में उपलब्ध सॉफ्टवेयरों की तुलना में हिन्दी सॉफ्टवेयरों (हिन्दी वर्तनी जांचक, प्रवाचक, हिन्दी शब्दकोष हिन्दी अनुवादक) की उपलब्धता नगण्य है।
  - हिन्दी के पाठ्यक्रम में सुधार हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किए गए–
    - पाठ्य पुस्तक बाह्य एवं आन्तरिक रूप से सुंदर व स्पष्ट हो।
    - सामाजिक आवश्यकताओं की अनुरूप हो।
    - हिन्दी के मूर्धन्य विद्वानों के पाठों से युक्त हो।
    - महिला लेखकों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व हो।
    - पाठ के अनुसार रंगीन व चित्रों से युक्त हों।
    - वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की संख्या अधिक हो।
    - गहन अध्ययन हेतु सन्दर्भ आधुनिक सामग्री, वेबलिंक, क्रियात्मक सीडी से युक्त हो।

- **दीपक शुक्ला (2010)** ने "उच्च शिक्षागत उत्तर प्रदेश की हिन्दी शिक्षण की समस्याओं का अध्ययन" नामक शीर्षक पर शोध किया और पाया कि—

- उच्च शिक्षागत हिन्दी शिक्षण की समस्याओं के निदान में अध्यापक का विशेष योगदान है। यदि अध्यापक अपने कर्तव्यों का पालन ईमानदारी से करे तो काफी हद तक उत्तर प्रदेश की उच्च शिक्षागत हिन्दी शिक्षण की समस्या स्वत: समाप्त हो जाएगी।
- हिन्दी भाषा को सीखने के लिए हमें गंभीरता पूर्वक उसके मन को एवं दृष्टिकोणों का अपनाना चाहिए।
- प्रचलित शिक्षण-विधियों के दूषित होने के निम्नलिखित प्रमुख कारण हैं—


उच्च शिक्षागत उत्तर प्रदेश की हिन्दी शिक्षण की समस्याओं का अध्ययन
(वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०) से

शोध-प्रबन्ध

डॉ० अभा तिवारी

दीपक शुक्ला

शिक्षक शिक्षा संकाय
कमला नेहरु भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान
सुल्तानपुर (उ०प्र०)
वर्ष - 2010

  - वर्तमान शिक्षण विधियों की रूढ़ि ग्रस्तता।
  - शिक्षकों की न्यूनताएँ।
  - शिक्षण-विधियों के सम्बन्ध में वैज्ञानिक अनुसन्धान का अभाव।
  - प्रगतिशील गत्यात्मक शिक्षक प्रविधियों के प्रचार में अधिकारियों की उदासीनता।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

इस अध्याय में शोधर्थी द्वारा हिन्दी शिक्षण से सम्बन्धित भारत के विभिन्न राज्यों में किए गए शोध अध्ययनों को संकलित किया गया है और पाया कि सैद्धान्तिक आधार पर हम कुछ मान्यताएँ या पूर्व विचारधाराएँ सुनिश्चित कर लेते हैं परन्तु कई बार अध्ययन के उपरान्त इसमें भिन्नता दिखाई देती है। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किसी भी अनुसन्धान की नींव होती है जिसके आधार पर अनुसन्धान रूपी महल खड़ा होता है। समस्या से सम्बन्धित साहित्य का सिंहावलोकन व समीक्षोपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि भूतकाल में हुए हिन्दी शिक्षण से सम्बन्धित अनुसंधानों में निबंध लेखन, संप्रेषण कौशल, न्यूनतम अधिगम स्तर, हिन्दी छात्राध्यापकों हेतु कार्यक्रमों की रचना, दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा, प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल, हिन्दी शिक्षण में आधुनिक तकनीक एवं चुनौतियाँ, उच्च शिक्षागत उत्तर प्रदेश की हिन्दी शिक्षण की समस्याओं एवं हिन्दी व्यावहारिक समीक्षा का विकास का अध्ययन किया गया है किंतु "व्यावहारिक हिन्दी: वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएँ" शीर्षक पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर शोध कार्य करने का निश्चय किया गया।

तृतीय-अध्याय

शोध अध्ययन की प्रक्रिया

3.1 शोध विधि

3.2 अध्ययन समष्टि

3.3 प्रतिदर्श चयन

3.4 प्रस्तुत अनुसन्धान में प्रयुक्त शोध

3.5 परीक्षण का प्रशासन

3.6 सांख्कीय प्रविधि

3.7 प्रतिशत

तृतीय-अध्याय

शोध अध्ययन की प्रक्रिया

3.1 शोध विधि

ज्ञानार्जन के यद्यपि अनेक आध्यात्मिक एवं वास्तविक, भौतिक एवं अभौतिक तथा संस्थागत एवं व्यक्तिगत स्रोत हो सकते हैं किन्तु शोध द्वारा ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन तर्क का प्रयोग है। तर्क का प्रयोग निगमन और आगमन विधि के आधार पर किया जा सकता है। निगमन विधि पर तर्क का क्रम 'सामान्य से विशिष्ट की ओर' रहता है जबकि आगमन विधि में तर्क का क्रम 'विशिष्ट से सामान्य की ओर रहता है। विधि तंत्र शोध का आवश्यक अंग होता है, इसके द्वारा समग्र अनुसन्धान की दिशा तथा योजना निर्धारित होती है, जिस पर शोध कार्य अवलम्बित होता है। शोध स्वरूप सुनिश्चित होने के साथ-साथ अध्ययन के लिए आवश्यक उपकरणों अथवा मापों का चयन, प्रतिदर्श का निर्धारण तथा परिकल्पना परीक्षण हेतु उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का चयन भी समाविष्ट होता है। प्रस्तुत अनुसन्धान में आगमन विधि का प्रयोग किया गया है। निष्कर्षों की संपुष्टि एवं सामान्यीकरण हेतु सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अनुसन्धान तुलनात्मक प्रकृति का सर्वेक्षण आधारित लघु अनुसन्धान है। इसके अन्तर्गत समान्यजनों द्वारा व्यावहरिक हिन्दी लेखन कौशल के प्रति की गई अशुद्धियों का अध्ययन साक्षात्कार द्वारा किया गया है। सर्वेक्षण के द्वारा प्राप्त सूचनाओं के उपरान्त आवृत्ति को आधार मानकर निष्कर्ष एवं सुझावों को सारगर्भित किया गया है।

3.1.1 सर्वेक्षण विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण पद्धति के अन्तर्गत साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किसी क्षेत्र में निश्चित तथ्यों की जानकारी करने के लिए किया जाता है, किन्तु परिस्थितिवश जब किसी आबादी की समस्त इकाइयों का सर्वेक्षण नहीं होता है और केवल एक उपयुक्त नमूने का सर्वेक्षण किया जाता है तो उस प्रतिदर्श को सर्वेक्षण विधि कहते हैं। अतः इसकी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुये वर्तमान अनुसन्धान का कार्य सम्पन्न किया गया है। इस पद्धति में मनोवैज्ञानिक चरों के घटित होने की आवृत्ति उनके वितरण एवं पारस्परिक सम्बन्धों का निर्धारण करने के लिए समष्टि का अध्ययन और उस समष्टि के प्रतिनिध्यात्मक प्रतिदर्श से प्राप्त किया जाता है।

3.2 अध्ययन समष्टि

किसी भी शोध अध्ययन में जीव संख्या या जनसंख्या का अर्थ अध्ययन की इकाइयों के समूह के रूप में लिया जाता है। व्यवहारपरक शोध चाहे वह प्रयोगात्मक हो या अप्रयोगात्मक हो, उनमें एक जनसंख्या से चुने गए कुछ व्यक्तियों या वस्तुओं के आधार पर शोधकर्ता एक अनुमान या निष्कर्ष पर पहुँचता है। जनसंख्या या समष्टि से तात्पर्य ऐसे व्यक्तियों या वस्तुओं से होता है जिसे शोधकर्ता अपने शोध के सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है तथा उसकी पहचान करके

रखता है। जनसंख्या की संख्या में सभी प्रकार (स्त्री, पुरुष, बच्चे) का लेखा-जोखा तैयार किया जाता है। शोध की जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा अतर्रा नगर के बाज़ार में दुकानों, मकानों, संस्थाओं इत्यादि में लगे विभिन्न बोर्डों, होर्डिंग, बैनर इत्यादि को अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया है।

3.3 प्रतिदर्श चयन

शोधकर्ता अपने शोध के लिए जीव संख्या से निश्चित संख्या में कुछ सदस्यों या वस्तुओं का चयन कर लेता है, इस चयनित संख्या को ही व्यवहारपरक शोध में प्रतिदर्श कहा जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में न्यादर्श का विशेष महत्व है। न्यादर्श के बिना शोध कार्य को शीघ्रता तथा सरलता से पूरा करना कठिन है। जनसंख्या की सभी इकाइयों का अध्ययन कष्ट साध्य एवं अधिक खर्चीला होता है। अनुसन्धान कार्य में अनुसन्धानकर्ता जनसंख्या की समस्त इकाइयों में से कुछ एक का अध्ययन करके संपूर्ण इकाइयों का निष्कर्ष निकाल लेता है अर्थात् न्यादर्श समूचे समूह का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करता है। न्यादर्श के प्रयोग से अध्ययन कार्य व्यावहारिक एवं समय, श्रम, साधन व धनराशि की दृष्टि से मितव्ययी हो जाता है। न्यादर्श के प्रयोग से परिणाम शुद्ध एवं शीघ्रता से प्राप्त हो जाते हैं।

गुड तथा हैट के अनुसार, "एक प्रतिदर्श एक बड़े समग्र का छोटा प्रतिनिधि है।"

करलिंगर के अनुसार, "प्रतिदर्श समग्र जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले अंशों का चयन है।"

- प्रस्तुत लघु शोध में असम्भाव्य न्यादर्श विधि के अंतर्गत सोदेश्य प्रतिचयन विधि द्वारा अतर्रा नगर क्षेत्र स्थित हिन्दी भाषा में लिखित पचास बोर्डों का चयन किया गया।

- **सोद्देश्य प्रतिचयन**

कुछ उद्देश्य कार्य न्यादर्श की प्रतिनिधित्वता नहीं चाहते हैं, उन्हें अपने विशेष उद्देश्य के लिए एक विशेष उद्देशीय न्यादर्श चाहिए। जैसे कि बढ़ती हुई महंगाई का प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इसका सर्वेक्षण करना हो तो इसके लिए एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए एक विशिष्ट समूह की आवश्यकता होगी। यह जनसंख्या का प्रतिनिधि होगा।

3.5 प्रस्तुत अनुसन्धान में प्रयुक्त शोध

प्रत्येक अनुसन्धान के सन्दर्भ में प्रदत्तों के संग्रह हेतु कतिपय शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। उपकरणों से प्राप्त नवीन एवं गुणात्मक प्रदत्त अनुसन्धान में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। शोध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसन्धानकर्ता इन उपकरणों में से एक अथवा एक से अधिक उपकरणों का प्रयोग कर सकता है। प्राय: अनुसन्धान कार्य में दो प्रकार के उपकरण प्रयुक्त होते हैं।

- मानकीकृत उपकरण
- स्वनिर्मित उपकरण

प्रत्येक अनुसन्धान के सन्दर्भ में कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं था अतः शोधकर्ता को शोध कार्य पूर्ण करने हेतु एक नवीन उपकरण की आवश्यकता अनुभव हुई फलस्वरुप शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित नवीन उपकरण निर्मित करने का निश्चय किया और डॉ. राजीव अग्रवाल के निर्देशन में साक्षात्कार अनुसूची को निर्मित किया गया जिसमें कुल 12 प्रश्न रखे गए।

3.4.1 साक्षात्कार अनुसूची

साक्षात्कार अनुसूची एक प्रकार की सामग्री संग्रहण हेतु बनायी गई प्रश्नों की सूची है। जिनके उत्तर स्वयं अध्ययनकर्त्ता अपने क्षेत्र में जाकर सूचनादाताओं के आमने-सामने के सम्पर्क द्वारा प्राप्त करता है। इस दृष्टि से अनुसूची में प्रश्नावली से कुछ मौलिक भिन्नता दिखलाई देती है। इस तरह सामाजिक अनुसन्धान में अनुसूची की उपयोगिता बहुत अधिक है क्योकि यह एक ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा अध्ययनकर्त्ता की अवलोकन शक्ति में अधिकाधिक वृद्धि होती है।

3.5 परीक्षण का प्रशासन

आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए निकटतम अतर्रा नगर क्षेत्र का चयन किया गया शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण कार्य हेतु साक्षात्कार अनुसूची को तैयार किया गया जिसमें व्यावहारिक हिन्दी के अनुप्रयोग सम्बन्धित प्रश्नों को सम्मिलित किया गया। इसमें बाज़ार में लगे बोर्डों का सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन किया गया जिसमें से संज्ञान में आए त्रुटियुक्त बोर्ड के मालिकों या दुकानदार के पास जाकर साक्षात्कार अनुसूची को उनकी सहमति मिलने के उपरान्त भरा गया। इस प्रकार भ्रमण कर एक माह में 50 साक्षात्कार पूर्ण किए गए।

3.6 सांख्कीय प्रविधि

किसी परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों को यदि ज्यों का त्यों प्रदर्शित कर दिया जाए तो उससे किसी भी प्रकार के परिणाम की प्राप्ति नहीं होती है। परन्तु जब उपयुक्त सांख्यिकीय विधि का प्रयोग करते हुये उसका विश्लेषण किया जाता है तो हमें एक सारगर्भित परिणाम की प्राप्ति होती है।जिसके परिणामस्वरूप हम परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष की व्याख्या कर पाते हैं, इसलिए सांख्यिकीय प्रविधियों को 'रीढ़ की हड्डी" कहा जाता है।

3.7 प्रतिशत

प्रतिशत (Percent) गणित में किसी अनुपात को व्यक्त करने का एक तरीका है। प्रतिशत का अर्थ है प्रति सौ या प्रति सैकड़ा (% =1/100) ; एक सौ में एक। उदाहरण के लिये माना कि गणित के प्रश्न पत्र का पूर्णांक 50 है और उस प्रश्नपत्र

में कोई छात्र 48 अंक प्राप्त करता है तो कहते हैं कि उस छात्र को **48/50 = 96/100 = 96 प्रतिशत (96%)** अंक मिले। इसी तरह कहते हैं कि वायुमण्डल में आक्सीजन की मात्रा 20% है। किसी कक्षा में 20 विद्यार्थियों में से केवल 15 ही उतीर्ण हुए तो कहेंगे कि केवल 75% विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए तथा 25% अनुत्तीर्ण (फेल) हो गये।

- **दण्ड आरेख**

दण्ड आरेख अथवा बार चार्ट यह एक प्रमुख एक विमीय आरेख है।इसके द्वारा एकल अथवा सामूहिक सांख्यिकीय आँकड़ों के मानों को आयताकार दण्डों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जहाँ प्रत्येक दण्ड की लम्बाई उसके द्वारा प्रदर्शित किए जा रहे मान के अनुपात में रखी जाती है।

चतुर्थ-अध्याय
प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण

4.1 भूमिका

4.2 त्रुटि विश्लेषण

4.3 अनुसूची का प्रश्नश: विश्लेषण

चतुर्थ-अध्याय

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण

4.1 भूमिका

अनुसन्धान कार्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या है।यही वह दिव्य दर्पण है जिसमें से मूल्यवान निष्कर्ष की छाया दृष्टिगत होने लगती है। विभिन्न उपकरणों द्वारा संकलित तथ्य चाहे कितने ही वैध तथा उपयुक्त क्यों न हों, अव्यवस्थित ही होते हैं। उनको प्रयोजनशील एवं उपयोगी कार्य में प्रयुक्त करने से पूर्व व्यवस्थित एवं सुसंगठित अर्थात वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध करने की आवश्यकता होती है। प्रदत्तों के विश्लेषण का अर्थ है उनमें निहित तथ्यों तथा अर्थों को निर्धारित करने हेतु सारणीबद्ध विषय सामाग्री का अध्ययन करना। इसके अंतर्गत प्रस्तुत जटिल कारकों को खण्डित करके सरल अंगों में विभाजित करना तथा व्याख्या के उद्देश्यों से उन अंगों को नवीन व्याख्या के सन्दर्भ में समायोजित करना होता है। इस सन्दर्भ में लुण्डवर्ग (1961) का कहना है कि-

"किसी भी समस्या का वैज्ञानिक विधि से अध्ययन करने का तात्पर्य संकलित समांकों का क्रमबद्ध अवलोकन, वर्गीकरण तथा निर्वचन करना है। हमारे प्रतिदिन के निष्कर्षों तथा वैज्ञानिक विधियों में मुख्य अन्तर इसके सत्य, दृढ़ता तथा सत्यापन किए जाने की शक्ति, योग्यता तथा विश्वसनीयता इत्यादि में है।"

अतः यह कहना उपयुक्त प्रतीत होता है कि अनुसन्धान में सामान्यतः दो सोपान होते हैं- प्रथम प्रदत्तों का संग्रह तथा द्वितीय प्रदत्तों का विश्लेषण।प्राप्त सामग्री अपने प्रारम्भिक रूप में बड़ी ही अस्पष्ट एवं जटिल होती है, उसके विश्लेषण के पश्चात ही उपलब्धियों के माध्यम से निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है।अतः प्रस्तुत अध्याय में स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची के सन्दर्भ में संकलित प्रदत्तों तथा सूचनाओं का सावधानीपूर्वक गहन विश्लेषण किया गया।

4.2 त्रुटि विश्लेषण

बोर्डों में व्यावहारिक हिन्दी के लेखन की त्रुटियों का विश्लेषण किया गया। त्रुटि विश्लेषण जनसामान्य की व्यावहारिक हिन्दी लेखन के क्षेत्र में समस्या को दर्शाता है। बोर्डों में व्यावहारिक हिन्दी लेखन में पाई गई त्रुटियों और गलतियों की पहचान का तात्पर्य है, बोर्डों के लेखन का परीक्षण करना। भाषा के शब्द, वाक्यांश, वाक्यविन्यास आदि श्रेणियों में शामिल त्रुटियों का पता लगाने, त्रुटियों के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए अत्यधिक एकाग्रता की आवश्यकता होती है। त्रुटियाँ सामान्यजनों द्वारा सामना की गई समस्याओं की वास्तविक संकेतक हैं। सामान्यजन द्वारा की गई त्रुटियों की पहचान करके शोधकर्ता ऐसे क्षेत्रों को आसानी से इंगित करने में सक्षम हैं जिन पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

तालिका सं. 4.2.1

परिलक्षित अशुद्धियाँ

क्र. सं.	अशुद्ध	शुद्ध रूप	आवृत्ति
1	पतांजलि	पतंजलि	1
2	निरोग	नीरोग	1
3	नगद	नक़द	1
4	प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	1
5	ब्रह्मण	ब्राह्मण	1
6	त्यौहारों	त्योहारों	1
7	दिवाली	दीवाली	1
8	खोया	खोवा	1
9	चिन्ह	चिह्न	3
10	सम्पर्क करे	सम्पर्क करें	2
11	बडी	बड़ी	1
12	तबियत	तबीयत	1
13	जिद	ज़िद	1
14	लाये	लाएँ	1
15	जाँचे	जाँचें	2



क्र. सं.	अशुद्ध	शुद्ध रूप	आवृत्ति
16	होम्यापैथिक	होम्योपैथिक	1
17	संतोष जनक	संतोषजनक	3
18	पम्पलेट	पैम्फलट/पैम्फिलट	3
19	कैची	कैंची	1
20	कापरेटिव	कॉपरेटिव	2
21	सामाग्री	सामग्री	2
22	विक्री	बिक्री	1
23	दुध	दूध	1
24	आँटा	आटा	1
25	अध्यात्मिक	आध्यात्मिक	1
26	जीर्णोद्धार	जीर्णोद्धार	1
27	ब्रम्ह	ब्रह्म	2
28	आबंटन	आवंटन	1
29	इंजैक्शन	इंजेक्शन	1
30	एकडमिक	अकादमिक	1







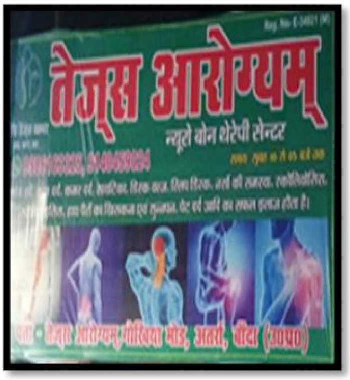
क्र. सं.	अशुद्ध	शुद्ध रूप	आवृत्ति
31	दुनियाँ	दुनिया	1
32	वेष भूषा	वेश भूषा	1
33	लाखो	लाखों	1
34	धातूएँ	धातुएँ	1
35	बेंचना	बेचना	1
36	अर्तरा	अतर्रा	1
37	इलेक्ट्रानिक्स	इलेक्ट्रॉनिक्स	1
38	बज़ार	बज़ार	1
39	दुल्हे	दूल्हे	1
40	कठिनाईयों	कठिनाइयों	1
41	एजंसी	एजेंसी	1
42	शुरूआत	शुरुआत	1
43	बिमार	बीमार	1
44	दोपहिया	दुपहिया	1
45	वस्तूओं	वस्तुओं	1





क्र. सं.	अशुद्ध	शुद्ध रूप	आवृत्ति
46	सुविधाए	सुविधाएँ	1
47	फोटोकापी	फोटोकॉपी	1
48	प्रिंन्टर्स	प्रिण्टर्स/ प्रिंटर्स	1
49	जाते है	जाते हैं।	5
50	प्रिंटिग	प्रिंटिंग	2
51	बिलबुक	बिल बुक	1
52	लेटरपैड	लेटर पैड	1
53	नेंशनल	नेशनल	1
54	बैंको	बैंकों	3
55	दवाईयां	दवाइयाँ	4
56	पाट्स	पार्ट्स	3
57	नेत्रजांच	नेत्र जाँच	1
58	मोड	मोड़	1
59	तेज् स	तेजस्	1
60	रोगो	रोगों	1





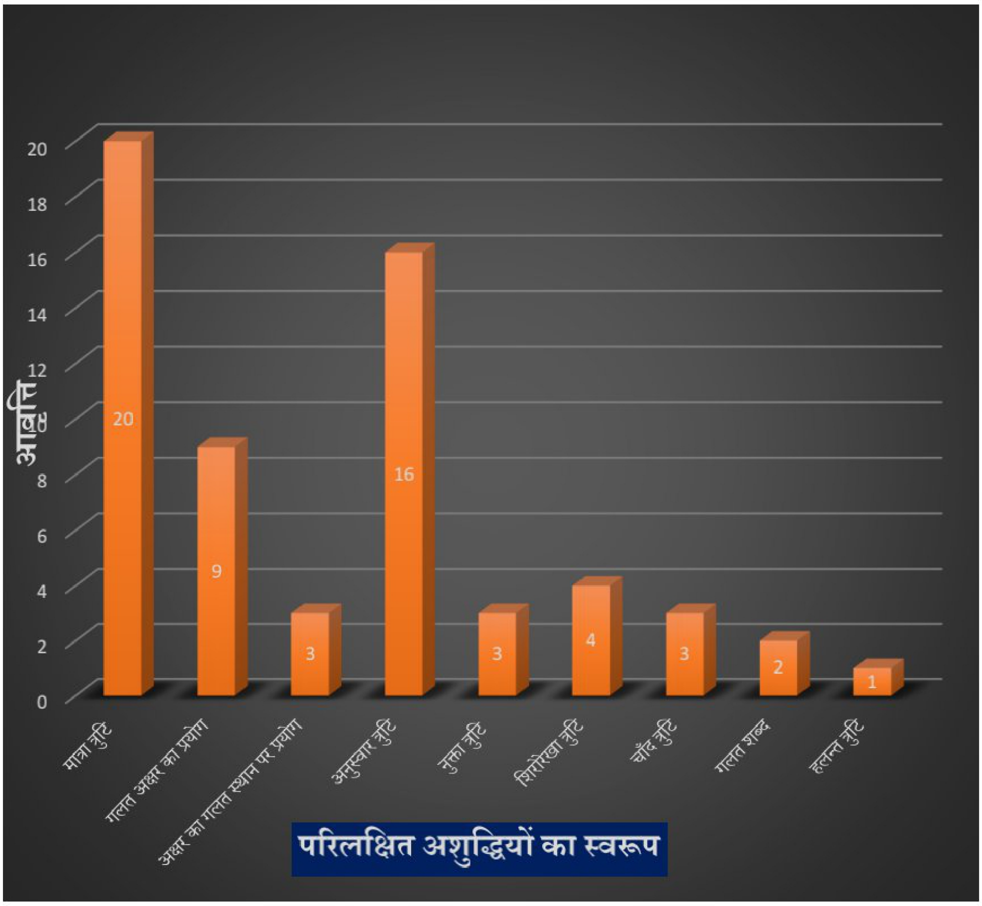
4.2.1 परिलक्षित अशुद्धियाँ का वर्गीकरण

- **मात्रा त्रुटि** – पतांजलि, निरोग, प्रदर्शिनी, त्यौहारों, दिवाली, तबियत, होम्यापैथिक, ब्रह्मण, सामाग्री, दोपहिया, दुध, अध्यात्मिक, इंजैक्शन, धातूएँ, दुल्हे, एजंसी, शुरूआत, बिमार, वस्तूओं, बज़ार। (कुल संख्या–20)
- **गलत अक्षर का प्रयोग–** आबंटन, विक्री, नगद, वेष भूषा, खोया, पम्पलेट, कठिनाईयों, दवाईयां।

  (कुल संख्या–9)
- **अक्षर का गलत स्थान पर प्रयोग–** चिन्ह, ब्रम्ह, अर्तरा। (कुल संख्या–3)
- **अनुस्वार त्रुटि–** दुनियाँ, आँटा, करे, लाये, जाँचे, कैची, लाखो, बेंचना, सुविधाए, प्रिंन्टर्स, जाते है, प्रिंटिग, नेंशनल, बैंको, रोगो, जीर्णोंद्धार। (कुल संख्या–16)
- **नुक्ता त्रुटि** – जिद, बडी, मोड। (कुल संख्या–3)
- **शिरोरेखा त्रुटि–** संतोष जनक, बिलबुक, लेटरपैड, नेत्रजांच। (कुल संख्या–4)
- **चाँद त्रुटि**– कापरेटिव, फोटोकापी, इलेक्ट्रानिक्स। (कुल संख्या–3)
- **गलत शब्द**– एकडमिक, पाट्स। (कुल संख्या–2)
- **हलन्त त्रुटि–** तेज् स। (कुल संख्या–1)

- **विश्लेषण**

  - तालिका संख्या 4.2.1 से स्पष्ट है कि व्यावहारिक हिन्दी के क्षेत्र में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ देखने को मिलती हैं जैसे मात्रा की गलतियाँ, गलत अक्षर का प्रयोग इत्यादि। इन्हें चित्र सं. 4.2.1 द्वारा स्पष्ट किया गया है-



चित्र संख्या 4.2.1

- चित्र संख्या 4.2.1 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि
  - एक तिहाई (सर्वाधिक) त्रुटियाँ मात्रा सम्बन्धी हैं जैसे–
    - ‘उ’ के स्थान पर ‘ऊ’ की मात्रा का प्रयोग (धातुएँ –धातूएँ)।
    - ‘ऊ’ के स्थान पर ‘उ’ की मात्रा का प्रयोग (दूल्हे–दुल्हे)।
    - ‘अ’ के स्थान पर ‘आ’ (पतंजलि–पतांजलि)।
    - ‘आ’ के स्थान पर ‘अ’ (आध्यात्मिक–अध्यात्मिक)।
    - ‘ई’ के स्थान पर ‘इ’ की मात्रा (नीरोग–निरोग)।
    - ‘ए’ के स्थान पर ‘ऐ’ की मात्रा (इंजेक्शन –इंजैक्शन)।

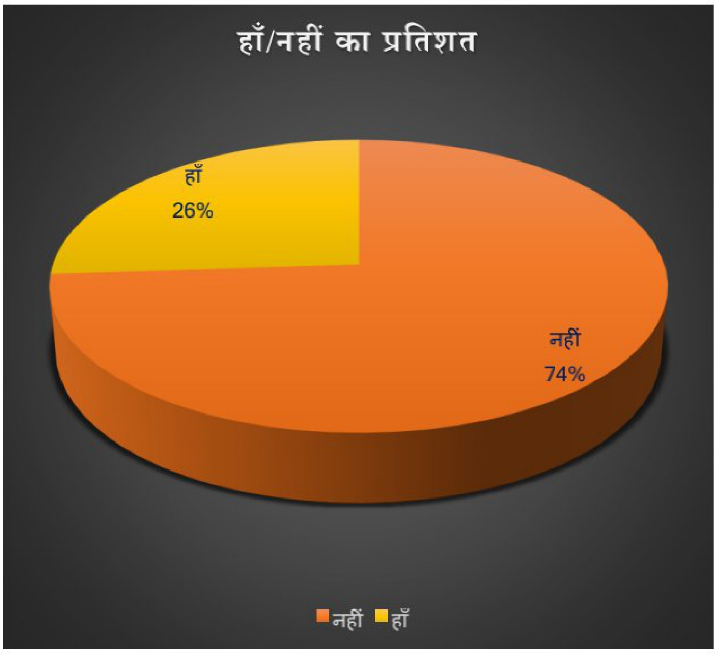
- ‘ओ’ के स्थान पर ‘औ’ की मात्रा (त्योहारों–त्यौहारों)।

- अनेक त्रुटियाँ गलत अक्षर के प्रयोग से सम्बन्धित हैं जैसे ‘व’ के स्थान पर ‘ब’ का प्रयोग (आबंटन– आवंटन)।
- कुछ त्रुटियाँ अक्षर का गलत स्थान पर प्रयोग सम्बन्धी हैं जैसे ‘ह’ के स्थान पर ‘न’ का प्रयोग (चिन्ह– चिह्न)।
- लगभग एक चौथाई त्रुटियाँ अनुस्वार सम्बन्धी हैं जैसे (आँटा– आटा, प्रिंन्टर्स–प्रिंटर्स)।
- तीन शब्दों में नुक्ता से सम्बन्धित त्रुटियाँ हैं जैसे (जिद– ज़िद, बडी–बड़ी)।
- चार शब्दों में शिरोरेखा से सम्बन्धित त्रुटियाँ जैसे (संतोष जनक– संतोषजनक, बिलबुक–बिल बुक)।
- तीन शब्द ऐसे हैं जिनमें चाँद सम्बन्धी त्रुटियाँ हैं जैसे (कापरेटिव– कॉपरेटिव, फोटोकापी–फोटोकॉपी)।
- दो शब्द ऐसे हैं जिन्हें गलत शब्द के रूप में लिखा जाना सम्बन्धी त्रुटि है जैसे (एकडमिक– अकादमिक)।
- एक शब्द में हलन्त को अन्य अक्षर में लगाना सम्बन्धी त्रुटि है जैसे (तेज् स– तेजस्)।

4.3 अनुसूची का प्रश्नश: विश्लेषण

4.3.1.क्या आपको अपने प्रतिष्ठान में पोस्टर /बैनर /बोर्ड/ पैम्फलेट या अन्य सामग्री में प्रयोग हुए हिन्दी शब्दों की त्रुटियों के बारे में जानकारी है?

नहीं	हाँ
37	13



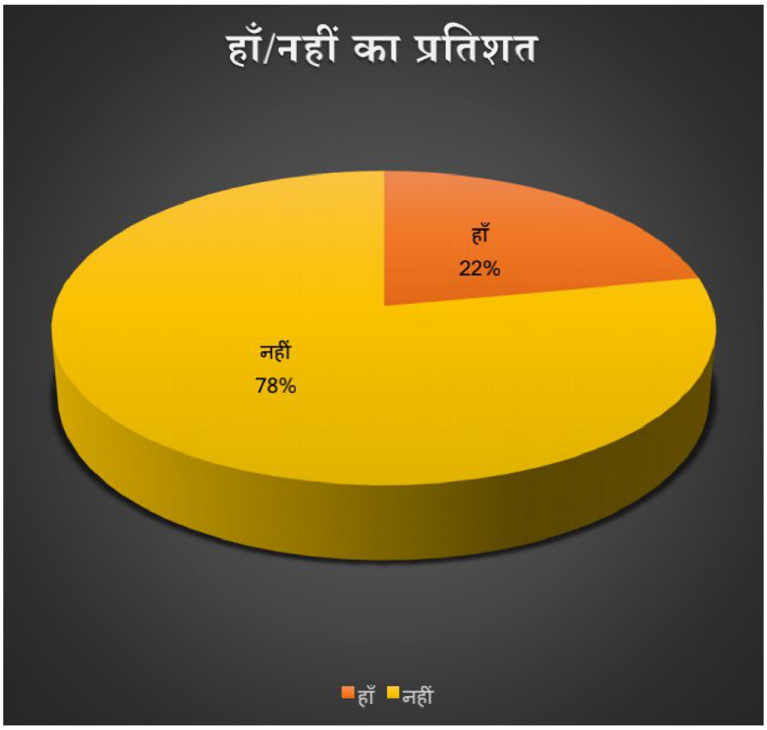
चित्र संख्या-4.3.1

- **विवेचन**

  - ऊपर्युक्त चित्र से स्पष्ट है कि अधिकांश व्यक्ति (74%) हिन्दी शब्दों की त्रुटियों से अनभिज्ञ थे। लगभग एक चौथाई (26) व्यक्तियों ने ही स्वीकार किया कि उन्हें त्रुटियों की जानकारी है किंतु जानकारी के बाद भी त्रुटियों को दूर न किया जाना अथवा उनके प्रति गंभीर न होना चिंतनीय विषय है।

4.3.2. क्या आपने इनको प्रिन्ट या चित्रण कराने से पहले ठीक प्रकार से जाँच-पड़ताल की?

नहीं	हाँ
39	11

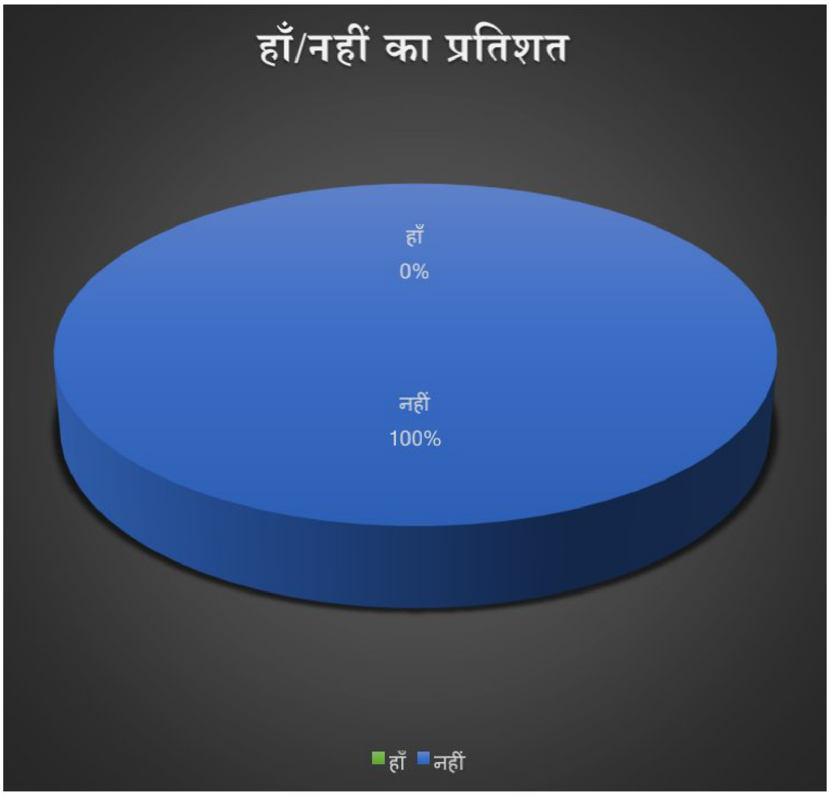


चित्र संख्या-4.3.2

- **विवेचन**
    - उपर्युक्त चित्र से यह स्पष्ट है कि अधिकांश व्यक्ति (78%) प्रिंट या चित्रण कराने से पहले ठीक प्रकार से जांच-पड़ताल नहीं की जो जिसके फलस्वरूप हिन्दी की त्रुटियों का पाया जाना और भी स्वाभाविक हो जाता है। लगभग एक चौथाई (22%) व्यक्तियों ने ही स्वीकार किया कि उनके द्वारा जाँच-पड़ताल की गई लेकिन उनके द्वारा त्रुटियों को चिह्नित कर दूर न किया जाना उनकी उदासीनता तथा गैरजिम्मेदारी को दर्शाता है।

4.3.3. क्या आपने प्रूफरीडिंग कराई?

हाँ	नहीं
0	50

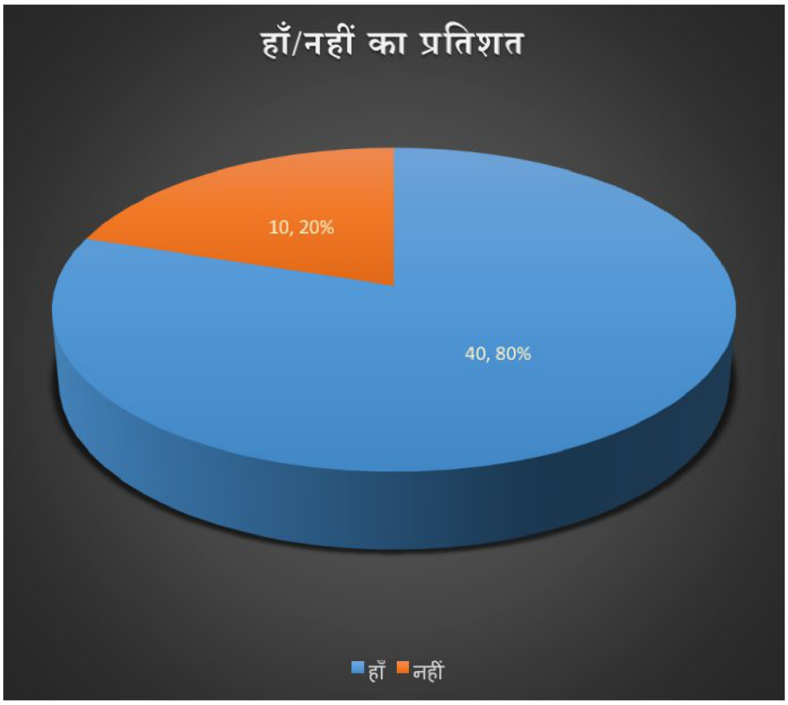


चित्र संख्या-4.3.3

- **विवेचन**
  - उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट है कि सभी व्यक्तियों द्वारा प्रूफरीडिंग का कार्य नहीं किया गया जो कि किसी भाषा को त्रुटि रहित बनाने के लिए अति आवश्यक है।

4.3.4. क्या प्रिन्टिंग प्रेस के अशुद्ध मुद्रण के बावजूद भुगतान किया गया?

हाँ	नहीं
40	10

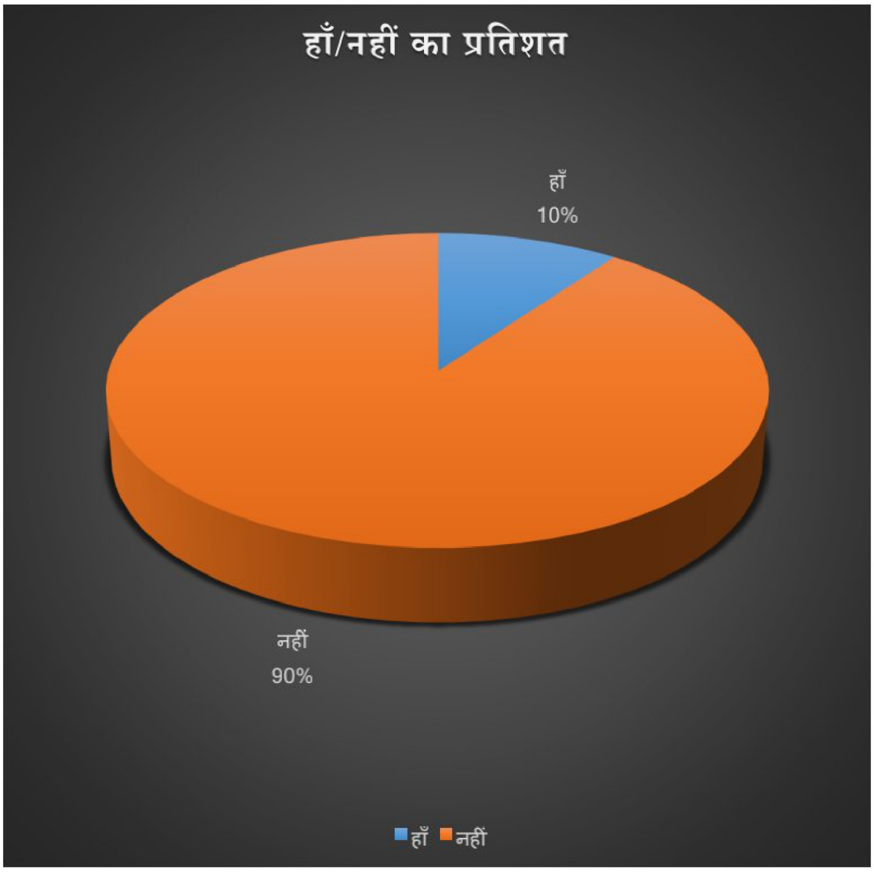


चित्र संख्या-4.3.4

- **विवेचन**
  - उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट है कि अधिकांश व्यक्तियों (80) द्वारा अशुद्ध मुद्रण होने के बावजूद पूर्ण भुगतान किया गया जो की हिन्दी भाषा की त्रुटियों को नज़र अंदाज करने में प्रोत्साहन का कार्य करता है तथा जिन भी व्यक्तियों (20%)द्वारा भुगतान नहीं किया गया वह भी त्रुटियों को सही करने का भार ग्रहण नहीं कर सके जो कि उनकी गलत निर्णय क्षमता को दर्शाता है।

4.3.5. क्या इससे पहले किसी ने आपको ऐसी त्रुटियों के बारे में सूचित किया?

हाँ	नहीं
5	45

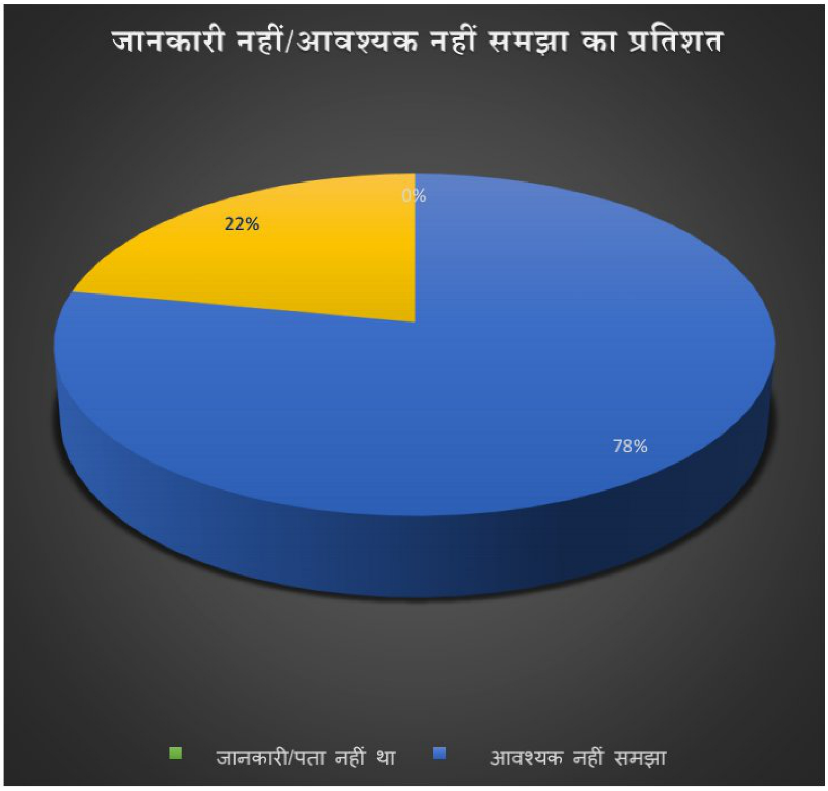


चित्र संख्या-4.3.5

- **विवेचन**
  - उपर्युक्त चित्र से यह स्पष्ट है कि अधिकांश व्यक्तियों (90%) को उनके द्वारा प्रयोग की गई हिन्दी की अशुद्धियों से अवगत ही नहीं कराया जबकि कुछ व्यक्तियों (10%) ने जानते हुए भी उन्हें सही करने में अक्षम साबित हुए।

4.3.6. अभी तक आपने इसे सही क्यों नहीं कराया?

जानकारी/पता नहीं था	आवश्यक नहीं समझा
39	11

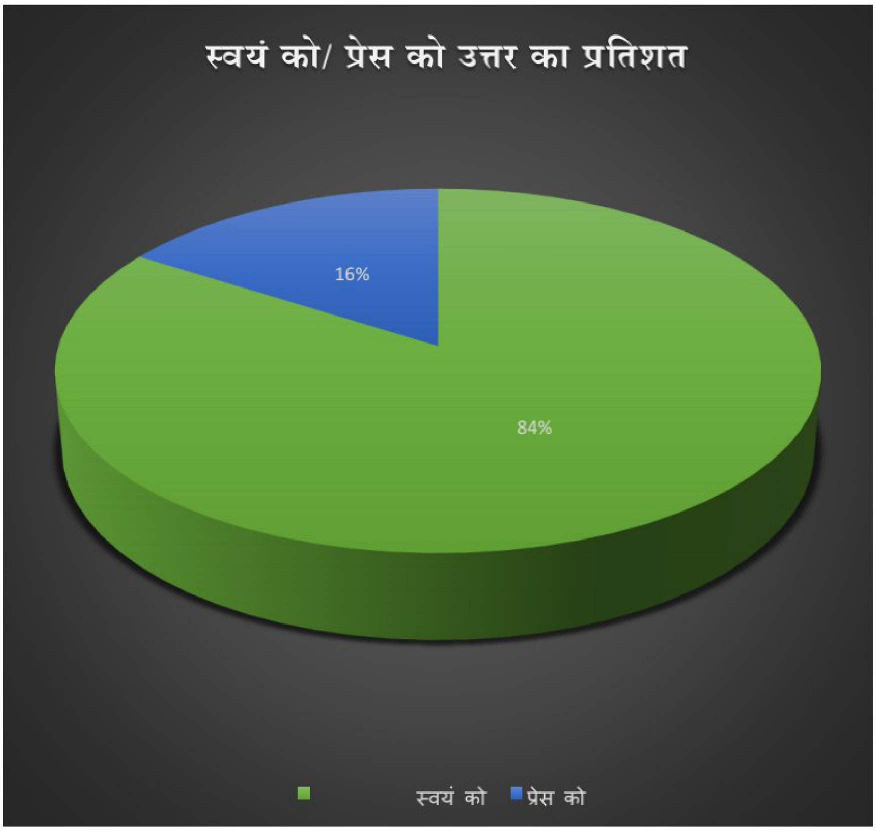


चित्र संख्या-4.3.6

- **विवेचन**
  - उपर्युक्त चित्र से यह स्पष्ट है कि अधिकांश व्यक्तियों (78%) को जानकारी का अभाव था कि उन्होंने हिन्दी भाषा की कैसी त्रुटियाँ की है जबकि एक चौथाई (22%) व्यक्तियों ने जरूरी ही नहीं समझा उनको ठीक करना जो कि उनकी हिन्दी के प्रति असंवेदनशीलता को प्रदर्शित करता है।

4.3. 7. इन त्रुटियों के लिए आप किसे जिम्मेदार मानते हैं?

स्वयं को	प्रेस को
42	8



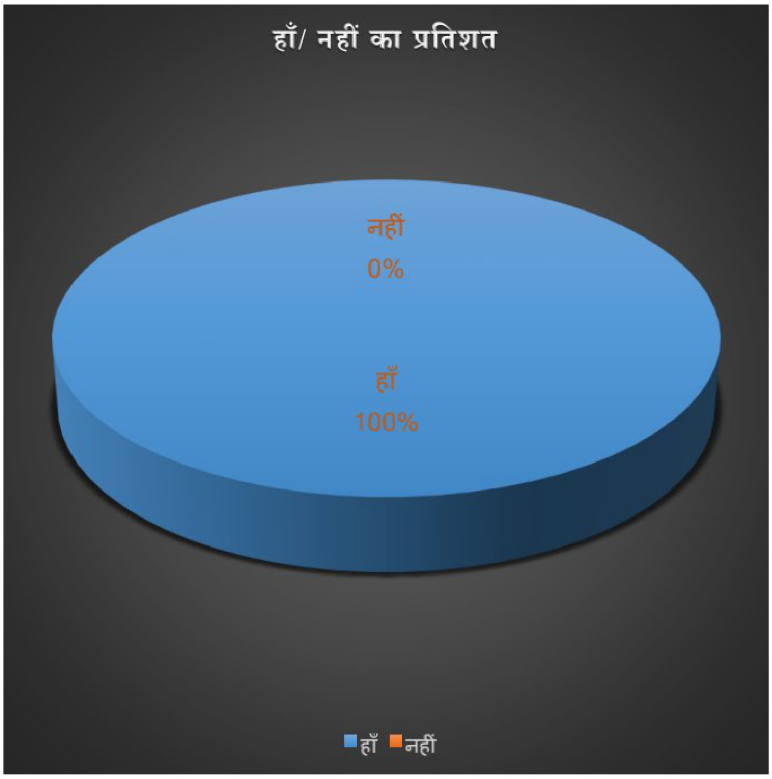
चित्र संख्या-4.3.7

- **विवेचन**

    - उपर्युक्त चित्र से यह स्पष्ट है कि अधिकांश व्यक्तियों (84%) ने स्वीकारा कि वह इन त्रुटियों के लिए जिम्मेदार हैं जबकि कुछ लोगों (16%) ने प्रिंटिंग प्रेस को जिम्मेदार ठहराया तथा अपने को इन त्रुटियों की जिम्मेदारी से मुक्त कर लिया।

4.3.8. क्या इन त्रुटियों को सुधार कर भविष्य में ध्यान देंगे ताकि ऐसी त्रुटियाँ ना हों?

हाँ	नहीं
50	0

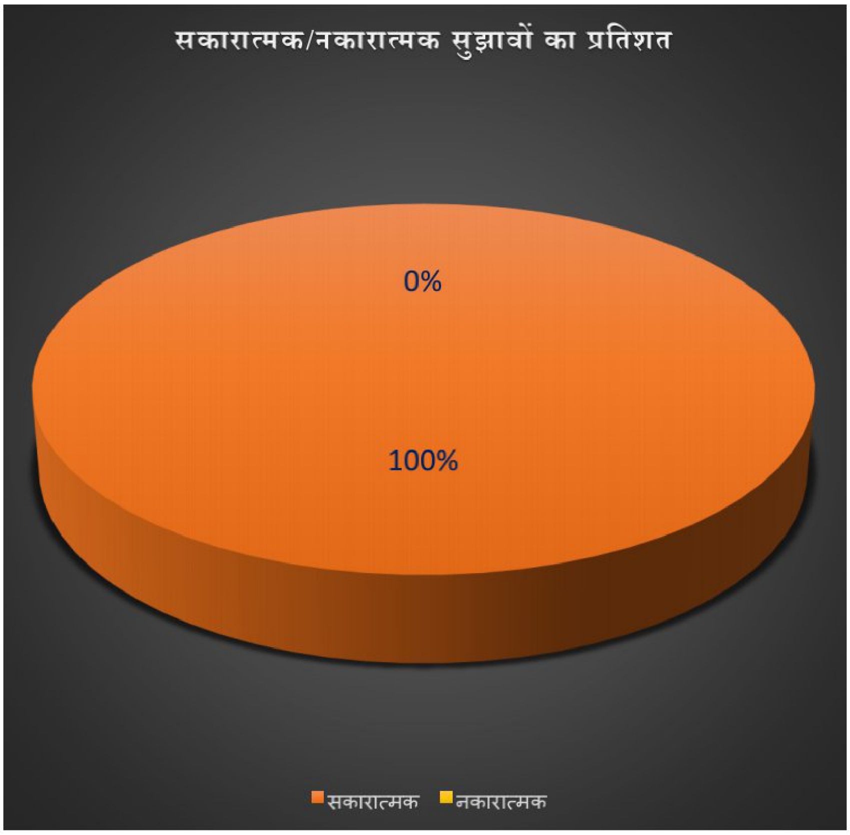


चित्र संख्या-4.3.8

- **विवेचन**
  - उपर्युक्त चित्र से यह स्पष्ट है कि सभी व्यक्तियों ने भविष्य में ऐसी गलतियों को न करने का आश्वासन दिया जो कि एक सकारात्मक नज़रिया को प्रदर्शित करता है।

4.3.9. ऐसी त्रुटियाँ भविष्य में ना हों इसके लिए शिक्षा में सुधार हेतु आपके सुझाव।

सकारात्मक	नकारात्मक
50	0



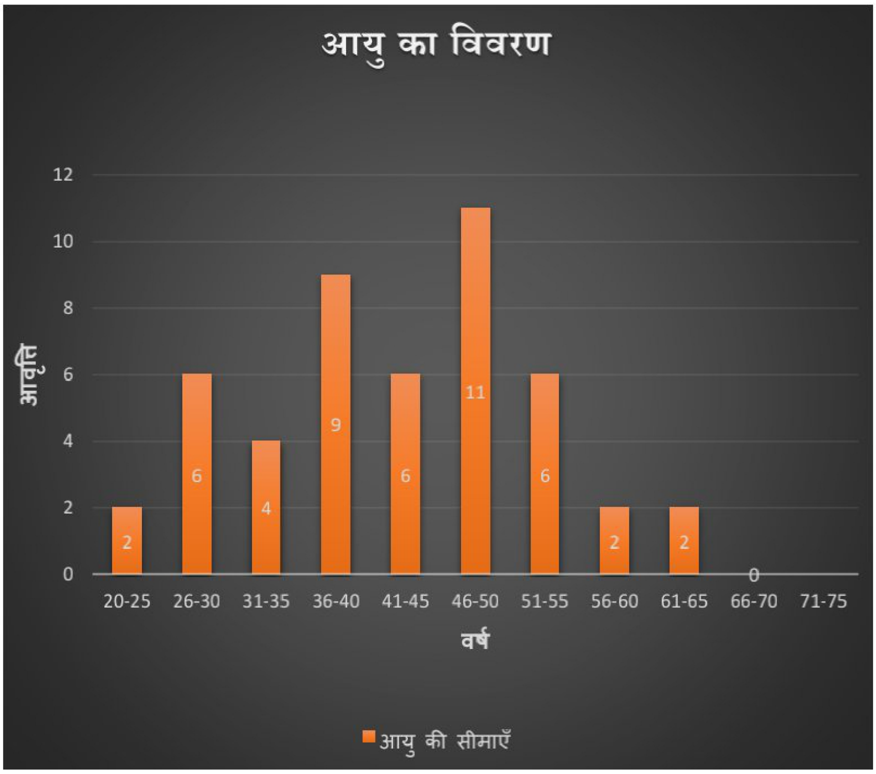
चित्र संख्या-4.3.9

- **विवेचन**
    - उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट है कि सभी लोगों द्वारा निम्नलिखित सकारात्मक सुझाव प्रदान किए गए जो की सही दिशा में जाने की चेष्टा को दर्शाता है-

क्र. सं.	विवरण	आवृत्ति
1	स्कूली शिक्षा में हिन्दी की बारीकियां पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।	12
2	योग्य शिक्षकों द्वारा ही अध्यापन कार्य कराया जाए।	10
3	हिन्दी भाषा को अधिक महत्व दें।	3
4	प्राथमिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दें।	2
5	शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जाना चाहिए।	6
6	बचपन से ही बच्चों को हिन्दी भाषा की सही जानकारी दी जानी चाहिए।	7
7	भाषा सम्बन्धी व्यावहारिक त्रुटियों की अनदेखी न करें।	5
8	हिन्दी की प्रमाणिक पुस्तकों का ही प्रयोग करें।	1
9	खड़ी बोली के शुद्ध रूप का ही प्रयोग करें।	2
10	अभिवावकों द्वारा अपने बच्चों को हिन्दी का सही ज्ञान कराया जाना चाहिए।	2

4.3. 10. आयु

वर्ष / आवृत्ति	20-25	26-30	31-35	36-40	41-45	46-50	51-55	56-60	61-70	70-75
	2	6	4	9	8	11	6	2	2	0

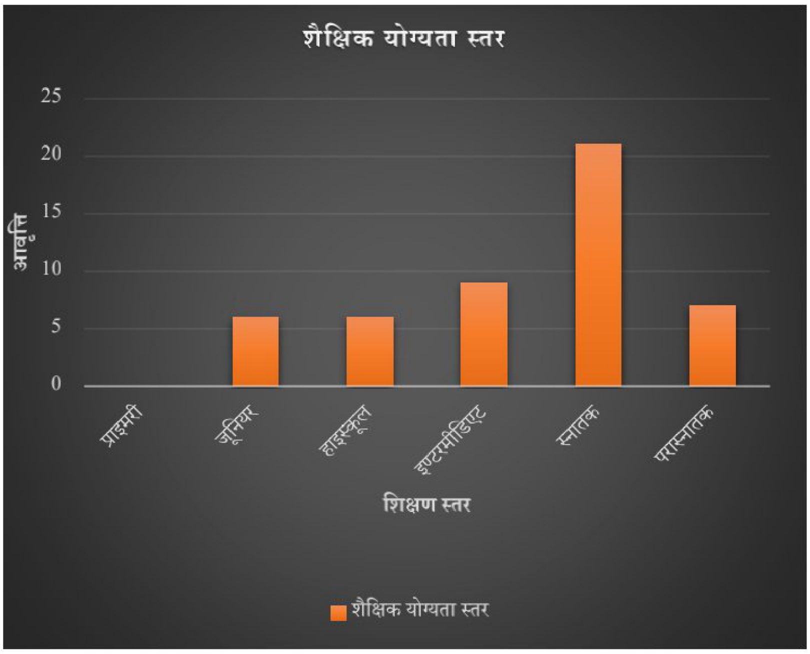


चित्र संख्या-4.3.10

- **विवेचन**
    - उपर्युक्त चित्र से यह ज्ञात होता है कि भिन्न-भिन्न आयु के व्यक्तियों ने हिन्दी शब्दों की त्रुटियाँ की जिससे यह पता चलता है की आयु विशेष के लोगों का कोई दोष नहीं है क्योंकि शिक्षा का प्राथमिक स्तर ही समस्त शैक्षिक स्तरों की नींव रखता है और त्रुटियाँ किसी भी आयु के लोगों द्वारा की जा सकती है। अधिकांश त्रुटियाँ 36 से 50 वर्ष वाले परिपक्व व्यक्तियों द्वारा की गई जो की अत्यंत चिंताजनक है।

4.3.11. योग्यता (शैक्षिक स्तर)

प्राइमरी	जूनियर	हाइस्कूल	इण्टरमीडिएट	स्नातक	परास्नातक
0	6	6	9	21	7

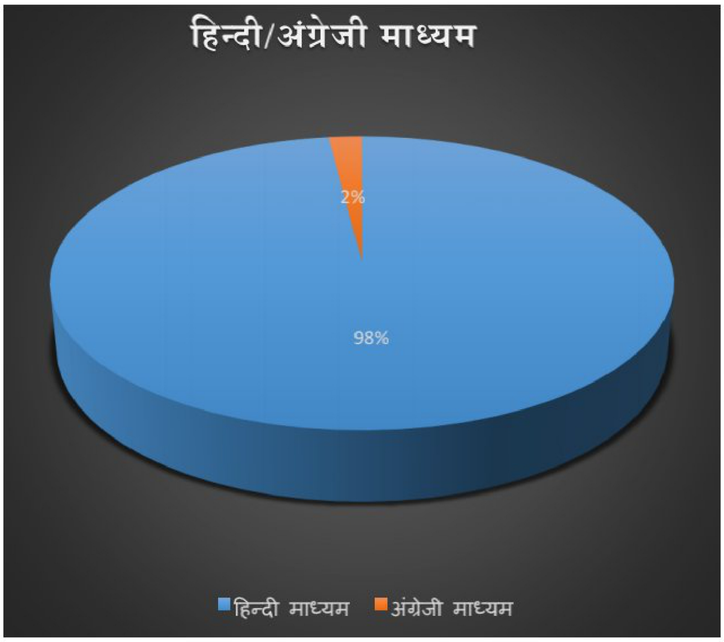


चित्र संख्या-4.3.11

- **विवेचन**
  - उपर्युक्त चित्र से यह स्पष्ट है कि हिन्दी की त्रुटि करने वाले व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न योग्यता है जिससे इसकी पुष्टि होती है कि हिन्दी की व्याकरणजन्य त्रुटि करने में शैक्षिक स्तर विशेष महत्व नहीं रखता। त्रुटि करने वालों में सबसे अधिक स्नातक स्तर की शैक्षिक योग्यता रखने वाले व्यक्ति हैं जो अत्यंत विचारणीय है तथा उच्च शिक्षा के स्तर पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है।

4.3.12. पढ़ाई का माध्यम

हिन्दी	अंग्रेजी
49	1



चित्र संख्या-4.3.12

- **विवेचन**
  - उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट है कि अधिकांश व्यक्ति (98%) ने हिन्दी माध्यम से ही अपनी शिक्षा पूरी की है और हिन्दी के प्रति उनके इस रवैया से यह पता चलता है की संपूर्ण हिन्दी माध्यम की शिक्षा पद्धति को ही दोष युक्त है जिसके परिणामस्वरूप ही ऐसी त्रुटियाँ देखने को मिलती हैं जबकि अंग्रेजी माध्यम के कुछ व्यक्तियों ने ऐसी त्रुटियाँ की जो की अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की भी कमजोरी को दर्शाता है।

पंचम-अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

5.2 अध्ययन के सुझाव

5.3 शैक्षिक उपादेयता

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव

पंचम-अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

- कुछ व्यक्ति हिन्दी की त्रुटियों से भिज्ञ होने के बाद भी वे उसे ठीक कराने के लिए तत्पर दिखाई नहीं दिए। वे इसके प्रति उदासीन थे।
- अधिकांश व्यक्तियों ने स्वीकारा कि उनके द्वारा प्रयोग की गई व्यावहारिक हिन्दी की त्रुटियों के लिए वह स्वयं जिम्मेदार हैं।
- 82 प्रतिशत सामान्यजनों द्वारा प्रिंट या चित्रण कराने से पहले ठीक प्रकार से जाँच-पड़ताल नहीं की गई।
- व्यावहारिक हिन्दी की त्रुटियाँ करने वाले किसी भी सामान्यजन ने प्रूफरीडिंग की प्रक्रिया पूर्ण नहीं की।
- 80 प्रतिशत व्यक्तियों ने अशुद्ध मुद्रण के बावजूद पूरा भुगतान किया।
- 36 से 50 आयु वर्ग के व्यक्तियों द्वारा सर्वाधिक त्रुटियाँ की गईं।
- 90 प्रतिशत लोगों को उनके द्वारा की गई व्यावहारिक हिन्दी की त्रुटियों को इससे पहले किसी अन्य व्यक्ति द्वारा सूचित नहीं किया गया।
- समस्त व्यक्तियों ने शिक्षा में सुधार हेतु सकारात्मक सुझाव प्रदान किए।
- भिन्न-भिन्न शैक्षणिक योग्यता रखने वाले व्यक्तियों द्वारा अशुद्ध हिन्दी का प्रयोग किया गया।

5.2 अध्ययन के सुझाव

- प्राथमिक शिक्षा में ही विद्यार्थी की नींव दृढ़ होती है। उस समय डाले गए संस्कारों का प्रभाव जीवनपर्यंत रहता है। अतः विशेष कर प्राथमिक शिक्षा में शिक्षकों का श्रेष्ठतम् होना अत्यंत आवश्यक है। प्राइमरी शिक्षा में सुन्दर लेख के आग्रह के साथ-साथ व्याकरण जन्य अशुद्धियों के प्रति अत्यंत कठोरता का बर्ताव आवश्यक है तभी वह विद्यार्थी के लेखन के गांभीर्य का विकास हो सकेगा और वह उसके जीवन का अंग बन सकेगा।
- यदि किसी भी व्यक्ति को अपनी गलतियों को सुधारना है तो सर्वप्रथम उसे सत्यनिष्ठ होने की आवश्यकता है उसे खुलेपन से अपनी गलतियों को सहज रूप में स्वीकारना चाहिए। गलतियों से सीखना सफलता की पहली सीढ़ी है। विद्यार्थियों में इसका विकास किया जाना चाहिए।

- यदि व्यक्ति को हिन्दी से सम्बन्धित व्याकरण शब्दावली का विशेष ज्ञान नहीं है तो विशेषज्ञ या कम्प्यूटर आदि की सहायता से प्रूफरीडिंग की प्रक्रिया अवश्य पूर्ण कर लेना चाहिए। प्रूफरीडिंग अनिवार्य रूप से जीवन का अंग बनाना चाहिए। मनुष्य कोई ईश्वर नहीं है उसे जाने अनजाने में गलतियाँ होना स्वाभाविक है। कम्प्यूटर में अनेक ऑनलाइन वर्तनी जाँचक सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिनका प्रयोग कर लिखित सामग्री को सुधारा जा सकता है परन्तु व्यक्ति प्रमादवश उसका उपयोग नहीं कर पाते। विद्यार्थियों द्वारा दत्त कार्य जमा करने में इसका अनिवार्य रूप से प्रयोग किये जाने पर बल दिया जाना चाहिए।
- किसी कारणवश यदि गलत शब्दों का मुद्रण हो भी जाता है तो उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। यदि प्रिंटिंग प्रेस की लापरवाही से हुआ हो तो उसका भुगतान कदापि नहीं करना चाहिए अथवा ऐसी दुकान का बहिष्कार किया जाना चाहिए गलत मुद्रण न केवल राष्ट्रभाषा का अपमान है अपितु आपकी सम्पूर्ण शिक्षा पर प्रश्न चिह्न लगाता है जीवन में कभी भी किसी गलत चीज को ना स्वीकारने की दृढ़ता का विकास विद्यार्थियों में किया जाना चाहिए।
- सामान्यजनों द्वारा की जाने वाली हिन्दी भाषा की त्रुटियों के लिए आयु विशेष जिम्मेदार नहीं है बल्कि व्यक्ति की प्राथमिक शिक्षा ही इसके मूल में है। एक बार बचपन में जो चीजें दृढ़ हो जाती हैं चाहे वह गलत ही क्यों न हों जीवन भर वैसी ही बनी रहती हैं क्योंकि वह अवचेतन का अंग बन जाती हैं। अतः शिक्षा के सभी स्तरों पर विशेषकर प्राथमिक शिक्षा में शुद्ध लेखन पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए।
- हिन्दी के विकास के लिए समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति कि यह नैतिक जिम्मेदारी है कि व्यावहारिक हिन्दी में प्रयोग हो रही अशुद्धियाँ का अवलोकन कर सम्बन्धित को त्रुटियों की पहचान करना चाहिए तथा सुधार हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए। दूसरे व्यक्ति को गलती के लिए टोकने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए विशेष कर मातृभाषा हिन्दी से सम्बन्धित मामलों में।
- व्यावहारिक हिन्दी की विसंगतियों (त्रुटियों) को दूर करने के लिए व्यक्ति में सकारात्मक विचारों का प्रवाह अत्यन्त आवश्यक है। यह दर्शाता है कि हिन्दी भाषा की प्रभावशीलता व्यक्ति के जीवन में व्याप्त है।
- अध्ययन के न्यादर्श में सम्मिलित व्यक्तियों द्वारा व्यावहरिक हिन्दी के उन्नयन हेतु निम्नलिखित सुझावों का गम्भीरता पूर्वक क्रियान्वयन किया जाना चाहिए–
    - स्कूली शिक्षा में हिन्दी की बारीकियों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
    - योग्य शिक्षकों द्वारा ही अध्यापन कार्य कराया जाना चाहिए।
    - हिन्दी भाषा को अधिक महत्व दें।
    - प्राथमिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दें।

- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जाना चाहिए।
- बचपन से ही बच्चों को हिन्दी भाषा की सही जानकारी दी जानी चाहिए।
- भाषा सम्बन्धी व्यावहारिक त्रुटियों की अनदेखी न करें।
- हिन्दी की प्रमाणिक पुस्तकों का ही प्रयोग करें।
- खड़ी बोली के शुद्ध रूप का ही प्रयोग करें।
- अभिवावकों द्वारा अपने बच्चों को हिन्दी का सही ज्ञान कराया जाना चाहिए।

5.3 शैक्षिक उपादेयता

किसी भी सोद्देश्य कार्य के शैक्षिक निहितार्थ अवश्य होते हैं। उस कार्य की सार्थकता उसके शैक्षिक निहितार्थ में होती है। किसी भी शैक्षिक उद्देश्य का महत्व तभी निर्धारित होता है जब उसकी शैक्षिक परिवेश में उपयोगिता स्थापित की जा सके। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की शैक्षिक उपादेयता निम्नवत रूप में वर्णित हैं-

6.3.1 विद्यार्थियों के लिए

विद्यालय में अध्ययनरत बच्चे भविष्य में राष्ट्र का स्वरूप व दिशा निर्धारण करते हैं तथा विद्यालय शिक्षक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में किसी अन्य विकासात्मक प्रयास की तरह समाज की बदलती आवश्यकताओं और मांगों को पूरा करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहते हैं। प्रस्तुत शोध कार्य विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों एवं सुझावों के आधार पर विद्यार्थी प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकेंगे एवं शिक्षा की वास्तविक उपयोगिता को समझकर शैक्षिक जीवन में एक नवीन परिवर्तन कर सकेंगे। वे शिक्षा को केवल नौकरी का साधन न मानकर शिक्षा के सम्यक अर्थ को अपने जीवन में उतारकर इन्द्रियों व मन को नियन्त्रित कर संयमित जीवन जीना सीख सकेंगे और उसका उपयोग ज्ञानार्जन में कर सकेंगे।

6.3.2 शिक्षकों के लिए

शैक्षिक विचारों की अवधारणा से प्रभावित होकर शिक्षक अपने शैक्षिक कार्य के वास्तविक उद्देश्य को जान सकेंगे और एक आदर्श शिक्षक के रूप में स्वयं को प्रतिस्थापित करने में सफल हो सकेंगे। वे आधुनिकता व दिखावे से दूर अपने आन्तरिक एवं बाह्य जगत का परिष्कार करके अनुशासित व आदर्श शिक्षक के गुणों को अपने व्यावहारिक जीवन में ढाल सकेंगे तथा शिक्षा को केवल धनार्जन का साधन न मानकर ज्ञान दान की एक पवित्र प्रक्रिया बनाकर शिक्षा के क्षेत्र में एक नया बिगुल बजा सकेंगे और शिक्षा के गिरते स्तर को ऊँचा उठा सकेंगे।

6.3.3 अभिभावकों के लिए

भौतिक संसाधनों के इस युग में अभिभावकों का बच्चों को पढ़ाने का उद्देश्य केवल धन कमाना है। शिक्षा में अभिभावकों का सहयोग सामाजिक-भावनात्मक विकास को बेहतर बनाने में मदद करता है खासकर प्राथमिक विद्यालय की कक्षाओं में छोटे विद्यार्थियों में। जब छात्रों को अपने शिक्षकों और माता-पिता दोनों से समर्थन मिलता है, तो सकारात्मक सम्बन्ध बनते हैं जो विकास के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में सहायता करते हैं। अभिभावक विद्यार्थियों को शिक्षा के संस्कारों से समन्वित करते हुए सर्वोत्कृष्ट शिक्षा के लिए प्रेरित कर देश को श्रेष्ठ नागरिक प्रदान करने में अपनी भूमिका प्रस्तुत कर सकेंगे।

6.3.4 जन सामान्य के लिए

शिक्षा से समाज में ज्ञान का तेज़ी से प्रसार होता है. शिक्षित समाज में ज्ञान का हस्तान्तरण पीढ़ी दर पीढ़ी होता है । शिक्षा पढ़ने और लिखने की क्षमता सिखाती है। पढ़ना और लिखना शिक्षा का पहला चरण है। ज़्यादातर जानकारी लिखकर दी जाती है। इसलिए, लेखन कौशल की कमी का मतलब है बहुत सारी जानकारी से वंचित रहना। इसलिए हिन्दी भाषा के वास्तविक स्वरूप को सहेज कर रखना जन सामान्य का कर्त्तव्य है।

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव

- प्रस्तुत शोध हिन्दी भाषा की त्रुटियों पर किया गया है। भावी शोध अन्य भाषाओं की त्रुटियों पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध बाँदा जनपद के अतर्रा नगर क्षेत्र में किया गया है। भावी शोध अन्य जनपदो के नगरीय क्षेत्रों पर किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध बैनर/ पोस्टर /बोर्ड इत्यादि में किया गया है। भावी शोध पैम्फलट/पत्र-पत्रिकाओं आदि पर किया जा सकता है।
- भावी शोध विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिका एवं असांइनमेंट में की गई त्रुटियों पर किया जा सकता है।
- भावी शोध शिक्षण संस्थानों के दीवार लेखन एवं अन्य चित्रण सामग्री पर किया जा सकता है।
- भावी शोध में शिक्षण संस्थानों की प्रयोग होने वाली विभिन्न अध्ययन सामग्री में किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पाण्डेय, श्याम किशोर (1982)। हिन्दी व्यावहारिक समीक्षा का विकास। पीo एचडीo शोध-प्रबन्ध, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

  httpp://hdl.handle.net/10603/329782

- मलिक, स्वप्ना (2009)। दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा के कौशल शिक्षण के संदर्भ में प्रचलित वर्तमान प्रविधियाँ: आलोचनात्मक अध्ययन

  < https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/24600 >

- चरण, श्याम, (2012)। हरियाणा राज्य में प्राथमिक स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के हिन्दी विषय में सीखने के न्यूनतम स्तर को प्राप्त करने वाली बाधाओं के स्वरूप एवं कारणों का अध्ययन। पीएचo डीo शोध-प्रबन्ध, कुरुक्षेत्र वश्वविद्यालय

  < http://hdl.handle.net/10603/35762 >

- तिवारी रमाकान्त (2019)। प्रशिक्षु अध्यापकों में लेखन कौशल: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में। लघु शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

  https://archive.org/details/merged-2/mode/2up?view=theater

- कुमार पंकज (2017)। हिन्दी शिक्षण में आधुनिक तकनीक एवं चुनौतियाँ। लघु शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

  https://archive.org/details/ilovepdf_merged_organized_202107/mode/2up?view=theater

- शुक्ला दीपक (2010)। उच्च शिक्षागत उत्तर प्रदेश की हिन्दी शिक्षण की समस्याओं का अध्ययन। पीएचo डीo शोध-प्रबन्ध,डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फ़ैज़ाबाद।

  http://hdl.handle.net/10603/239354

- wikipedia https://en.wikipedia.org/wiki/India
- https://www.dictionary.com/browse/practical
- **https://www.shabdkosh.com/hi/dictionary/english-hindi/Hindi**
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/453120
- http://archive.org/

परिशिष्ट

(1) अतर्रा नगर का मान चित्र

(2) साक्षात्कार अनुसूची

(3) प्रदत्त संकलन

(4) जीवन वृत्त

परशिष्ट (1)

अतर्रा नगर का मान चित्र



परिशिष्ट-3

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज अतर्रा, बाँदा

शिक्षक-शिक्षा संकाय

साक्षात्कार अनुसूची

शोध पर्यवेक्षक — शोधार्थी

डॉ० राजीव अग्रवाल — रवि कान्त वर्मा

हिन्दी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। यह संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा है और भारत की सबसे अधिक और समझी जाने वाली भाषा है इसलिए हम सभी का यह कर्तव्य है कि हिन्दी भाषा के वास्तविक स्वरूप को अशुद्ध होने से बचाएँ। इस शोध कार्य में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु अपना अमूल्य योगदान दें।

1. क्या आपको अपने प्रतिष्ठान में पोस्टर /बैनर /बोर्ड/ पैम्फ़लेट या अन्य सामग्री में प्रयोग हुए हिन्दी शब्दों की त्रुटियों के बारे में जानकारी है? ....

2. क्या आपने इनको प्रिन्ट या चित्रण कराने से पहले ठीक प्रकार से जाँच-पड़ताल की? ....

3. क्या आपने प्रूफरीडिंग कराई? ....

4. क्या प्रिन्टिंग प्रेस के अशुद्ध मुद्रण के बावजूद भुगतान किया गया? ....

5. क्या इससे पहले किसी ने आपको ऐसी त्रुटियों के बारे में सूचित किया? ....

6. अभी तक आपने इसे सही क्यों नहीं कराया? ....

7. इन त्रुटियों के लिए आप किसे जिम्मेदार मानते हैं? स्वयं को ☐ प्रिन्टिंग प्रेस को ☐

8. क्या इन त्रुटियों को सुधार कर भविष्य में ध्यान देंगे ताकि ऐसी त्रुटियाँ ना हों?

....

9. ऐसी त्रुटियाँ भविष्य में ना हों इसके लिए शिक्षा में सुधार हेतु आपके सुझाव-

....

....

10. आयु......

11. योग्यता ....

12. पढ़ाई का माध्यम ....

- नाम...
- पता ....

परिशिष्ट - 3

प्रदत्त संकलन














Mob- 9335794789
9454851185
प्रो॰- दिनेश कुशवाहा
वीर कुशवाहा
बजरंगी दूध डेयरी एण्ड बेकरी
पता- नौरनी रोड, जैन मन्दिर के बगल में, अतर्रा
हमारे यहाँ शुद्ध देशी घी, ताजा पनीर, दूध, दही, क्रीम, मक्खन, ग्रीन बैली मटर, खोया
नोट - शादी पार्टी व अन्य शुभ अवसरों पर आर्डर बुक किया जाता है। हमारे यहाँ बर्थ-डे केक भी उपलब्ध है
दूध
घी
मट्ठा
पनीर
केक
खोवा
दही


स्वाती आटो
पार्ट्स एण्ड सर्विस
हमारे यहाँ पल्सर, अपाचे, होण्डा साइन,
एक्टिवा, एवं हीरो व अन्य सभी गाड़ियों के पार्ट्स एवं
रिपेयरिंग का कार्य कुशलता पूर्वक किया जाता है
प्रो. अरविन्द मो0- 7303538037


स्वाती फोटोकापी एण्ड ऑनलाइन सेन्टर
हमारे यहाँ आय, जाति, निवास एवं स्पाइरल बैंडिंग सहित
ऑनलाइन सम्बन्धित सभी कार्य किये जाते हैं
प्रो०- रामरूप यादव


जनसेवा केन्द्र & पेन कार्ड सेन्टर
ऑनलाइन फार्म
आय, जाति, निवास
आधार कार्ड संशोधन
राशन कार्ड
फोटो/फोटोकॉपी
वृद्धापेंशन
बिजली बिल जमा
छात्रवृत्ति फार्म
वाहन बीमा
लेमिनेशन
ड्राइविंग लाइसेंस
पंजाब नैशनल बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
pnb punjab national bank
...the name you can BANK upon!
ग्राहक सेवा केन्द्र
BC NAME :- VED PRAKASH SINGH
BC CODE :- K3400768
LINK BRANCH :- ATARRA
MOB NO :- 9125973344
VISIONINDIA
यहाँ पर सभी बैंको के आधार तथा ATM से रूपये निकासी / जमा की सुविधा उपलब्ध है।


अपना ऑनलाइन
एवं फोटो कॉपी सेन्टर
ATM खाता खोलने का सेन्टर
आय,जाति,निवास
लोन लेने भरने
नौकरी फार्म
घरेलु गैस
जनसेवा केन्द्र के साथ अन्य सुविधाए
पेय पदार्थ व गिफ्ट सेन्टर, टी-शर्ट में
छपाई, चाभी छल्ले आदि ।
Mob:
9125213832


अंग्रेजी
दवाईयाँ
बाजार भाव से
70% - 90%
तक कम कीमत पर उपलब्ध है
Shot on moto g54 5G
4 Sept 2024, 6:58 pm


दीप मोबाइल एण्ड इलेक्ट्रानिक्स
मो0- 9125100229
airtel
Vi
Jio
BSNL
oppo
vivo
SAMSUNG
TECNO
realme
mi


प्रकाश
लाईट
रिपेरिंग सेन्टर
DJ कैबिनेट, स्पीकर
एम्पलीफायर, यूनिट
माईक, मिक्सर
पंखा, कूलर, मोटर आदि उचित
रेट पर रिपेयर किये जाते है।


के थोक व फुटकर विक्रेता
पता- बाँदा रोड, अतर्रा
॥ जय श्री राम ॥ प्रो.-राहुल तिवारी मो.-7310425121 ॥ जय श्री राम ॥
श्री बालाजी Cyber cafe
जनसेवाकेंद्र
ऑनलाइन फार्म
फोटो कॉपी
पासपोर्ट फोटो
राशन कार्ड
वृद्धा पेंशन
पैन कार्ड
आधार कार्ड
आय प्रमाण पत्र
जाति प्रमाण पत्र
निवास प्रमाण पत्र
छात्रवृत्ति
विधवा पेंशन
रिजल्ट
नकद जमा, निकासी की सुविधा उपलब्ध है।
वोटर कार्ड
सभी प्रकार के ऑनलाइन फार्म भरे जाते है।
पता-HIC कॉलेज के सामने अतर्रा


Reg. No- E-34921 (M)
तेजस आरोग्यम्
न्यूरो बोन थेरेपी सेन्टर
9506163325, 9140459024
समय: सुबह 10 से 05 बजे तक
कमर दर्द, सायटिका, डिस्क वल्ज, स्लिप डिस्क, नसों की समस्या, स्कोलियोसिस,
हाथ पैरों का खिसकना एवं सुन्नपन, पेट दर्द आदि का सफल इलाज होता है।
पता - तेजस आरोग्यम्, गोखिया मोड, अतर्रा, बाँदा (उ0प्र0)


ओम ऑफसेट प्रिन्टर्स


छात्रावास
किराये के लिए कमरे उपलब्ध है
पता - नीरज द्विवेदी 'रवि' बॉयज हॉस्टल
अतर्रा डिग्री कॉलेज के सामने, शनि मन्दिर के बगल से अतर्रा (बाँदा)
Mob- 9696121032


श्रेया
गेस्ट
हाउस
AC व NON AC रूम
ठहरने की उत्तम व्यस्था
स्टेशन रोड, अतर्रा
Mob:9793165208


अतर्रा मेडिसिन हाउस
दवा की दुकान
हमारे यहाँ अंग्रेजी, आयुर्वेदिक एवं पशुओं
की दवायें मिलती हैं।
अतर्रा मेडिसिन हाउस
दवा की दुकान


इंडियन बैंक
Indian Bank
गोपाल इण्टरनेट
ग्राहक सेवा केन्द्र
इण्डियन बैंक में निःशुल्क खाता खुलवायें
Mob: 6388699382
छात्रवृत्ति
पैन कार्ड
आय,जाति,निवास
वृद्धा पेंशन
खतौनी
आधार कार्ड
राशन कार्ड
मनी ट्रान्सफर
आनलाइन फार्म
कलर प्रिन्ट आउट
फोटो कॉपी
धान पंजीकरण
केन्द्र प्रभारी - संदीप गुप्ता
सभी बैंको का पैसा निकाला जाता है।
आधार कार्ड से पैसा निकाले


OKAYA®
Okaya loves your appliances
RAMU ELECTRONICS
+91 9695504708
Mob- 6392114657
रामू इलेक्ट्रानिक एण्ड फर्नीचर
Mob: 6392114657


Mob.9453349294, 9956194909,
ग्वालियरआटो
इलेक्ट्रिक
प्रो. तीर्थसागर,सानू भइया
05/01/2022

व्यावहारिक हिन्दीः वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएँ

हिंदी है पहचान हमारी, हिंदी से अभिमान,
बने विश्व की शक्ति यह, ऐसा हो अभियान।

तकनीक संग कदम बढ़ाए, अब यह डिजिटल हुई,
हर क्षेत्र में स्थान बनाए, भाषा नहीं कमजोर हुई।

कल भी थी, आज भी है, कल भी होगी शान,
विश्व पटल पर लहराएगी, हिंदी की पहचान।

ISBN: 978-9-33424-498-4
9 789334 244984